



दहकती खबरें

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र

E-Mail: dahaktikhabrain2011@gmail.com

अन्याय के विरुद्ध आम आदमी की आवाज

DAVP CODE: 132457

RNL NO. UPHIN/2011/39283

(लखनऊ से प्रकाशित एवं सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में प्रसारित)

वर्ष-13

अंक-237

लखनऊ, मंगलवार 07 मई, 2024

पृष्ठ-8

मूल्य-01 रूपए

संक्षिप्त समाचार

राजस्थान में जियो का दबदबा बरकरार, मार्च माह में 1.46 लाख ग्राहक जोड़े, ट्राई रिपोर्ट

जयपुर, 06 मई। रिलायंस जियो ने राजस्थान में एक बार फिर अच्छा प्रदर्शन किया है। जियो ने राजस्थान में 31 मार्च, 2024 तक 2.67 करोड़ ग्राहकों का आधार हासिल किया है। इस बड़े ग्राहक आधार के साथ



जियो राजस्थान में नंबर एक टेलीकॉम ऑपरेटर के स्थान पर बरकरार है। ट्राई की रिपोर्ट अनुसार, मार्च महीने में जियो ने राजस्थान में कुल 1.46 लाख नए उपभोक्ताओं को जोड़ा और अन्य दूरसंचार

ऑपरेटरों से बेहतर प्रदर्शन किया। मार्च 2024 में भारतीय एयरटेल ने 80,152 ग्राहक जोड़े। वहीं, वोडाफोन आइडिया और बीएसएनएल ने राजस्थान में क्रमशः 83,800 लाख और 1.14 लाख मौजूदा ग्राहक खो दिए। राजस्थान का कुल वायरलेस सेवा का ग्राहक आधार 31 मार्च, 2024 तक बढ़कर 6.63 करोड़ पहुंच गया है और इस महीने में कुल ग्राहक आधार 28,014 तक बढ़ा है। ट्राई की रिपोर्ट अनुसार, जियो राजस्थान में 2.67 करोड़ ग्राहकों के साथ शीर्ष पर है, जिसके बाद भारतीय एयरटेल, वोडाफोन आइडिया और बीएसएनएल की ग्राहक संख्या क्रमशः 2.33 करोड़, 1.06 करोड़ और 55.62 लाख रही। जियो ने राजस्थान के 350 से अधिक शहरों और कस्बों में 5जी सेवाएं शुरू कर दी हैं और राज्य में इसकी 5जी कवरेज सबसे व्यापक और बड़ी है।

प्रियंका ने संभाली रायबरेली-अमेठी की कमान, दो पूर्व मुख्यमंत्रियों को बनाया गया पर्यवेक्षक



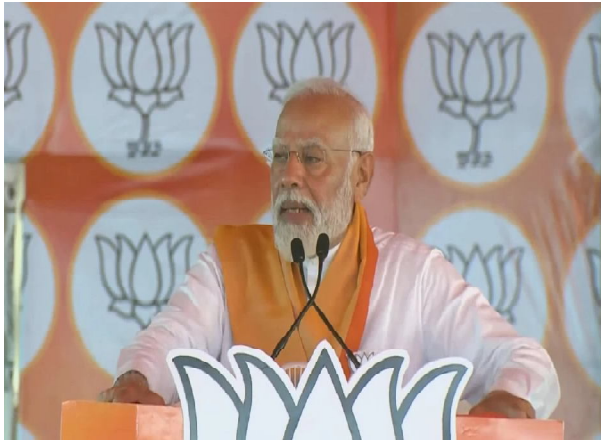
लखनऊ। कांग्रेस पार्टी अमेठी और रायबरेली की सीट हर हाल में अपने पास बनाए रखना चाहती है। इसके लिए दोनों ही सीटों पर प्रियंका गांधी अपनी 40 सदस्यीय टीम के साथ

काम पर लगी हुई हैं। इसके तहत वह घर-घर में दस्तक देंगी और नुककड़ सभाएं करेंगी। वहीं, कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को अमेठी लोकसभा सीट पर व छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को रायबरेली सीट की जिम्मेदारी देते हुए पर्यवेक्षक तैनात किया है। रायबरेली सीट पर राहुल गांधी प्रत्याशी हैं जबकि अमेठी सीट पर गांधी परिवार के करीबी रहे किशोरी लाल शर्मा को उम्मीदवार बनाया गया है। लंबे समय तक चली रस्साकशी के बाद गांधी परिवार ने अंतिम दिन रायबरेली से राहुल गांधी और अमेठी से केएल शर्मा को चुनाव लड़ाने का फैसला लिया था। नामांकन के वक्त सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी, रावट वाड़ा ने भी राहुल के नामांकन में शामिल होकर एकजुटता का संदेश दिया था। इन दोनों सीटों की कमान प्रियंका गांधी को सौंपी गई है। पार्टी की ओर से अभी तक अधिकृत कार्यक्रम जारी नहीं किया गया है, लेकिन प्रियंका गांधी की 40 सदस्यीय टीम रायबरेली पहुंच गई है। यह टीम प्रियंका के चुनाव प्रचार की रणनीति तैयार कर रही। सूत्रों के मुताबिक प्रियंका गांधी सामाजिक न्याय के मुद्दे को आक्रामक तरीके से उठाएंगी। इसके लिए प्रदेशभर से डाटा इकट्ठा किए गए हैं। वह करीब ढाई सौ नुककड़ सभा करेंगी। इन सभाओं में स्थानीय मुद्दे भी होंगे और मंच पर मौजूद लोगों को सामाजिक समीकरण की दृष्टि से रखा जाएगा। सूत्रों का यह भी दावा है कि टीम की ओर से तैयार किए गए रोडमैप के तहत वह कुछ इलाके में घर-घर जनसंपर्क करेंगी। इस बीच स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों और दशकों से गांधी परिवार के साथ पारिवारिक संबंध रखने वाले लोगों के घर तक जाएंगी। उनके ठहरने के लिए रायबरेली के एक गेस्ट हाउस में इंतजाम किया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक प्रियंका रायबरेली और अमेठी के बूथवार निगरानी करेंगी। इसके लिए पार्टी की ओर से उनकी टीम को दोनों लोकसभा क्षेत्र की कमेटियों की सूची रविवार को सौंप दी गई है। प्रदेश मुख्यालय से सभी कमेटियों को अलर्ट रहने का भी संदेश दिया गया है। वह सोशल मीडिया अभियान पर भी नजर रखेंगी। उनकी टीम में कई ऐसे विशेषज्ञ भी शामिल हैं, जो फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप पर नजर रखते हुए उनके संचालन के लिए रणनीति तैयार करेंगे। यह रणनीति प्रियंका गांधी के निर्देश के तहत बनेगी। चुनाव के दौरान प्रियंका गांधी अलग-अलग संगठनों के लोगों से संवाद करेंगी। इसके लिए रायबरेली और अमेठी के विभिन्न सामाजिक संगठनों की सूची भी इकट्ठा की गई है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक प्रियंका गांधी रायबरेली से ही अन्य राज्यों में कुछ समय के लिए चुनाव प्रचार के लिए जा सकती हैं। वह यहां से कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट जैसे नेताओं के निरंतर संपर्क में रहते हुए चुनाव अभियान का संचालन करेंगी।

पार्टी के रणनीतिकारों की मानें तो प्रियंका गांधी के रायबरेली में रुकने की कई वजह हैं। वह यहां रुककर रिश्तों की दुहाई देंगी और इसके जरिए सियासी धार को मजबूत करेंगी। ऐतिहासिक तथ्य देखें तो 1952 से 62 तक फिरोज गांधी, 1962 से 1967 तक आरपी सिंह और फिर पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने यहां से रिश्ते मजबूत किए। बीच में एक दौर ऐसा भी आया कि पारिवारिक नजदीकी लोगों को रायबरेली की कमान मिली, लेकिन 1999 में सोनिया गांधी ने फिर इस क्षेत्र की कमान संभाल ली।

कांग्रेस ने मान ली अपनी हार: प्रधानमंत्री नरेंद्र

राज्य के विकास के लिए डबल इंजन की सरकार जरूरी



ऐजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में सार्वजनिक बैठक को संबोधित किया। लोकसभा चुनाव के साथ साथ आंध्र प्रदेश में विधानसभा

आगामी लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड जीत दर्ज करेगा, बल्कि आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में भी परचम लहराएगा। श्विकसित आंध्र प्रदेश, श्विकसित भारत के निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। मोदी ने कहा कि कांग्रेस नेताओं ने नतीजों से पहले ही चुनाव में हार स्वीकार कर ली है। साथ ही, वाईएसआर कांग्रेस पार्टी को आंध्र प्रदेश की जनता ने पूरी तरह से खारिज कर दिया है। वाईएसआर कांग्रेस के पास पूरे 5 साल थे, लेकिन इस बार उसने बुरी तरह बर्बाद कर दिया और आंध्र प्रदेश को पिछड़पन की बेंडियों में जकड़े रखा। उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश

ऊर्जा और प्रतिभा से समृद्ध है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आंध्र प्रदेश की ताकत का लोहा पूरी दुनिया मानती है। आज, जब भारत बड़ी प्रगति कर रहा है, तो आंध्र प्रदेश को भी ऐसा ही करना चाहिए। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के तहत आंध्र प्रदेश का विकास असंभव है। विकास के नाम पर काम शून्य और भ्रष्टाचार शत प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि पूरा देश टीवी पर देख रहा है, झारखंड में म्च ने नोटों के पहाड़ खोदकर निकाले हैं। कांग्रेस के मंत्री के निजी सचिव के नौकर के पास से ये नोटों का पहाड़ निकला है। कांग्रेस वालों ने अपने नौकर के घर को काली कमाई का गोदाम बना रखा था। इससे पहले भी, कांग्रेस के एक सांसद

के घर से नोटों का एक पहाड़ मिला था। इतने नोट थे कि मशीनें भी गिनते गिनते थक गई थीं। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि ऐसा क्यों है कि जिनके पास भी नोटों के पहाड़ मिलते हैं, वो कांग्रेस की फर्स्ट फेमिली के करीबी होते हैं। ऐसा तो नहीं, ये जो पैसे पकड़े जा रहे हैं, वो कहीं सप्लाई होने के लिए रखे थे। कहीं ऐसा तो नहीं, कांग्रेस की फर्स्ट फेमिली ने पूरे देश में काली कमाई के गोदाम बना रखे हैं। उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश में केंद्र सरकार की परियोजनाओं में जनहित को पटरी से उतारने के लिए देरी की जा रही है। इसलिए, आंध्र प्रदेश में डबल इंजन की सरकार सुनिश्चित करें, ताकि कुछ भी रुका न रहे, कुछ भी अविकसित

न रहे। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत श्रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के शानदार रास्ते पर चलते हुए तेजी से विकास कर रहा है। आपका एक वोट मुसीबतों को अवसर में बदल सकता है। आज पूरा विश्व भारत को लेकर आशावादी है। उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश के लोगों को कांग्रेस और वाईएसआर कांग्रेस की नकारात्मकता से दूर रहना चाहिए। आंध्र प्रदेश के लोगों को भारतीय जनता पार्टी का समर्थन करना चाहिए। उन्होंने लोगों से कहा कि सुनिश्चित करें कि आप 13 मई को वोट करें और हमारा समर्थन करें। इस बार आंध्र प्रदेश के पास है मोदी की गारंटी। हमारे प्रत्याशी को जिताने और विकास होते हुए देखें।

टी20 विश्व कप पर आतंकी हमले का खतरा, आईसीसी और मेजबान देश अलर्ट

नई दिल्ली, 06 मई। आईपीएल 2024 के तुरंत बाद यूएसए और वेस्टइंडीज में 1 जून से टी20 विश्व कप का आयोजन होना है। हालांकि, इस बीच टूर्नामेंट पर आतंकी हमले का साया आ गया है।

आतंकी खतरे के बारे में पूछे जाने पर आईसीसी के एक अधिकारी ने बताया, आईसीसी उचित योजनाएं सुनिश्चित करने के लिए मेजबान देशों के साथ मिलकर काम कर रही है। रिपोर्ट सामने आते ही हमने तुरंत अधिकारियों से बात की और क्रिकेट वेस्टइंडीज ने सभी को आश्वासन दिया है कि किसी भी जोखिम से निपटने के लिए एक मजबूत सुरक्षा योजना बनाई गई है।

वेस्टइंडीज में टी20 विश्व कप के मैच एंटीगा एंड बारबुडा, बारबाडोस, गुयाना, सेंट लूसिया, सेंट विसेंट एंड ग्रेनेडाईस के अलावा त्रिनिदाद एंड टोबैगो में होंगे। अमेरिका के पलोरिडा, न्यूयॉर्क और डलास में भी मैच निर्धारित हैं, लेकिन वहां इन खेलों पर किसी खतरे का कोई संकेत नहीं है। सेमीफाइनल मुकाबले त्रिनिदाद और गुयाना में खेले जाएंगे, वहीं फाइनल बारबाडोस में खेला जाना है। दुनिया की टॉप-20 टीमों को पांच-पांच के चार समूहों में बांटा जाएगा। प्रत्येक समूह से शीर्ष दो टीमों सुपर 8 चरण के लिए क्वालीफाई करेंगी।

संविधान और आरक्षण खत्म करना चाहते हैं मोदी

मध्य प्रदेश के खरगोन में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि यह चुनाव संविधान और आरक्षण बचाने के लिए है। इस देश के गरीब के पास जो कुछ भी है, चाहे आपकी जमीन हो, जल हो, जंगल हो, नौकरी हो, सब कुछ संविधान ने दिया है, अब नरेंद्र मोदी ने इसे (संविधान) बदलने का, इसे खत्म करने का मन बना लिया है। उन्होंने बड़ा वादा करते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार में आने पर मनरेगा मजदूरों को 400 रुपए दैनिक मजदूरी देगी। आशा, आंगनवाड़ी की महिलाओं का आमदनी दोगुनी होगी और एक लाख रुपए महिलाओं के बैंक अकाउंट में जाएगा। कांग्रेस नेता ने कहा कि भाजपा के नेता ने एक आदिवासी युवा पर पेशाब कर उसका वीडियो बनाया और पूरे हिंदुस्तान में दिखाया। यहां हमारे प्रत्याशी के खिलाफ लड़ने वाले कैंडिडेट के रिश्तेदार ने आदिवासी बिटिया के साथ रेप किया। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग चाहते हैं कि आप आगे न बढ़ पाओ और आपके बच्चे इंजीनियर-डॉक्टर न बन पाएं। ये आपका जल-जंगल-जमीन छीनना चाहते हैं। अगर हमें इनको



रोकना है तो एकसाथ लड़ना होगा। ताकि आपके अधिकारों, संविधान और आरक्षण को बचाया जा सके। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि अजाना जैसे लोगों की नजर आपके जल-जंगल-जमीन पर है। पीएम मोदी, अपने मित्र अजाना को आपका जल-जंगल-जमीन सौंप देना चाहते हैं। नरेंद्र मोदी ने पहले ही हिंदुस्तान के एयरपोर्ट, पॉवर स्टेशन, पोर्ट, इन्फ्रास्ट्रक्चर, डिफेंस सेक्टर सबकुछ अजाना जैसे लोगों को दे दिया है। उन्होंने कहा कि मीडिया कहता है कि मनरेगा से लोगों की आदत बिगड़ती है। लेकिन जब अरबपतियों का कर्जा माफ होता है तो उसको यह विकास कहते हैं। लेकिन

जैसे ही हमारी सरकार आएगी, हम मनरेगा मजदूरों को 400 रुपए दैनिक मजदूरी देंगे। राहुल ने साफ तौर पर कहा कि नरेंद्र मोदी आपका आरक्षण खत्म करना चाहते हैं। उश्रक के नेताओं ने साफ कहा है- उश्रक की सरकार बनते ही वे दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों से आरक्षण छीन लेंगे। जहां उश्रक आरक्षण छीनने की बात कर रही है, वहीं हम आरक्षण से 50:50 की लिमिट हटाकर उसे बढ़ा देंगे। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी आएंगे तो उनसे बोलना-खटाखट... खटाखट... खटाखट। उनसे कहना जो आपने अरबपतियों के लिए किया, वो काम कांग्रेस पार्टी हिंदुस्तान के गरीबों के लिए करने जा रही है।

रद्द उड़ानों का टिकट बेचने के आरोप में कंतास एयरलाइन पर गिरी गाज, चुकाने पड़ेंगे 7.9 करोड़ डॉलर



नई दिल्ली, 06 मई। ऑस्ट्रेलिया की प्रमुख एयरलाइन क्वांटास एयरवेज पहले से रद्द हो चुकी उड़ानों के लिए टिकटों की बिक्री से जुड़ा मुकदमा को निपटाने को तैयार हो गया है। एयरलाइन ने इसके लिए 120 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी 7.9 करोड़ अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमत दे दी। एयरलाइन 100 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर या 6.6 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि जुमाने के रूप में देगी वहीं 86,000 से अधिक ग्राहकों को 20 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी 1.3 मिलियन अमेरिकी डॉलर मुआवजे के रूप में दिया जाएगा। यह मामला 2021-2022 का है।

ऑस्ट्रेलियाई प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता आयोग की अध्यक्ष जीना कैस-गॉटलिब ने सोमवार को एक बयान में कहा, क्वांटास का आचरण अहंकारी और अस्वीकार्य था। कई उपभोक्ताओं ने एक ऐसे विमान की बुकिंग कर छुट्टी, व्यापार और यात्रा की योजना बनाई होगी, जिसे पहले ही रद्द कर दिया गया था। उन्होंने कहा कि हम यह कार्रवाई इसलिए सुनिश्चित कर रहे हैं क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में काम करने वाली कंपनियों हर समय अपने ग्राहकों के साथ स्पष्ट, सटीक और ईमानदारी से संवाद करती हैं।

हडसन ने कहा कि यह समझौता अदालत की मंजूरी के अधीन है और यह एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि हम राष्ट्रीय विमानन कंपनी के प्रति विश्वास बहाल करने की दिशा में काम कर रहे हैं। हडसन ने कहा, जब प्लेइकवूडवुड शटडाउन के बाद उड़ान फिर से शुरू हुई, तो हम मानते हैं कि कंतास ने ग्राहकों को निराश किया। हम जानते हैं कि हमारे कई ग्राहक समय पर विमान रद्द होने की सूचनाएं प्रदान करने में हुई हमारी विफलता से प्रभावित हुए थे और हमें ईमानदारी से इसके लिए खेद है। क्वांटास, जिसने पिछले साल +1.1 बिलियन का वार्षिक लाभ दर्ज किया था। हाल के वर्षों में क्वांटास एयरलाइन टिकटों की बढ़ती कीमतों खराब सेवा मानकों के दावों और प्लेइकवूडवुड-19 महामारी के दौरान 1,700 ग्राउंड स्टाफ की बर्खास्तगी जैसी चीजों के लिए चर्चा में रहा है। सितंबर में, तत्कालीन सीईओ एलन जॉयस ने एयरलाइन की व्यापक आलोचना के बीच शीर्ष पद पर 15 साल रहने के बाद अपनी सेवानिवृत्ति को दो महीने के लिए आगे बढ़ाया था।

अप्रैल में भारत की सेवा गतिविधियों की वृद्धि दर 14 साल में सबसे तेज, पीएमआई के आंकड़े जारी

नई दिल्ली, 06 मई। देश के सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर अप्रैल में थोड़ी कम रही, लेकिन इस दौरान अनुकूल आर्थिक हालात और मजबूत मांग के बीच नये कारोबार और उत्पादन की वृद्धि 14 साल में सबसे तेज रही। एचएसबीसी इंडिया सर्विसेज बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स मार्च के 61.2 से गिरकर अप्रैल में 60.8 पर आ गया। सर्वेक्षण के सदस्यों ने उत्पादन में ताजा तेजी के लिए अनुकूल आर्थिक परिस्थितियों, मांग में मजबूती और नए काम बढ़ने को जिम्मेदार बताया। परचेजिंग मैननेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) की भाषा में सूचकांक का 50 से ऊपर रहना विस्तार को दर्शाता है जबकि 50 से नीचे रहना संकुचन को दर्शाता है। एचएसबीसी के मुख्य भारतीय अर्थशास्त्री प्रांजल भंडारी ने कहा, एनए ऑर्डरों में और तेजी से भारत की सेवा गतिविधियां अप्रैल में थोड़ी नरम गति से बढ़ीं। इस दौरान घरेलू

मांग में तेजी के अलावा, फर्मों ने दुनिया के कई हिस्सों से नए व्यापार लाभ का उल्लेख किया। सितंबर 2014 में पीएमआई सीरीज शुरू होने के बाद से अंतरराष्ट्रीय बिक्री में दूसरी

कर्मचारियों का स्तर बढ़ाया, हालांकि नियुक्तियों में वृद्धि की रफ्तार सुस्त रही। कीमत के मोर्चे की बात करें तो मजदूरी के दबाव और उच्च खाफ़ा कीमतों कारण लागत में इजाफा हुआ, जिसका भार फर्मों ने आंशिक रूप से अपने ग्राहकों पर डाला। भंडारी ने कहा, इंडनपुट कॉस्ट लगातार तेजी से बढ़ रही है, हालांकि यह मार्च की तुलना में धीमी है, लेकिन इससे सर्विसे फर्म के मार्जिन में कमी आई है। कीमतों के बढ़ने से इसके

सबसे तेज वृद्धि दर्ज की गई। हालांकि, कई कंपनियों ने संकेत दिया कि वर्तमान आवश्यकताओं के लिए पेरोल संख्या पर्याप्त थी, और नौकरी सृजन की दर पिछले वित्तीय वर्ष के अंत में देखी गई तुलना में मामूली और नरम थी। भंडारी ने कहा, एनए ऑर्डर बढ़ने के कारण कंपनियों ने अपने

एक हिस्से का भार फर्मों ने ग्राहकों पर डाला है। एचएसबीसी इंडिया कंपोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स अप्रैल में 61.5 तक पहुंच गया, जो मार्च में 61.8 था। नवीनतम रीडिंग 14 वर्षों में सबसे अधिक रही और यह निजी क्षेत्र में विस्तार की पर्याप्त दर का संकेत है।

संक्षिप्त समाचार

बेटियों को शिक्षा दिलाना

हमारा महत्वपूर्ण लक्ष्य— युद्धवीर

दुर्बल अभावग्रस्त वर्ग की कन्याओं के लिए सावित्री बाई छात्रावास का उद्घाटन

प्रयागराज(आरएनएस)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुसंगिक संगठन सेवा भारती प्रयागराज विभाग के द्वारा आज समाज के दुर्बल अभावग्रस्त वर्ग की कन्याओं के लिए सावित्री बाई छात्रावास का उद्घाटन क्षेत्र सेवा प्रमुख युद्धवीर द्वारा लोक नाथ चौक स्थित भवन में किया गया।

उक्त अवसर पर युद्धवीर ने कहा कि जिन बालिकाओं को यह पता नहीं था कि वो कभी स्कूल जा पाएंगी या नहीं उन बालिकाओं ने अवसर मिलने पर अपनी प्रतिभा से हम सबको अर्चयित किया है और सम्पूर्ण विश्व में अपना और राष्ट्र का नाम रोशन किया है। बेटियों को शिक्षा दिलाना हमारा महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता सुजीत अध्यक्ष सेवा भारती प्रयागराज के द्वारा की गयी।

कार्यक्रम में डॉ नौरज अग्रवाल वात्सल्य, संरक्षक प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक प्रो डॉ एस.पी. सिंह एवम मनोज जायसवाल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काशी प्रांत सेवा प्रमुख सत्य विजय सिंह, विभाग सेवा प्रमुख वीर कृष्ण, सेवा भारती के उपाध्यक्ष संदीप चौधरी, महामंत्री पवन श्रीवास्तव, मंत्री डॉ संतोष सिंह पटेल, कंचन, भाग सेवा प्रमुख सत्येंद्र, संजय राय, एनएमओ से डॉ कमलाकर सिंह, सभासद, सुनीता चोपड़ा सहित अनेक गणमान्य बंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन विभाग मंत्री डॉ संतोष पटेल ने किया।

सैंट मैरीज़ कॉन्वेंट इन्टर कॉलेज की

छात्रा ने सीआईएससीई बोर्ड में

91प्रतिशत अंक हासिल कर बढ़ाया मान

प्रयागराज(आरएनएस)। आजमगढ़ में एक कालेज में लेक्चरर पद पर कार्यरत शिक्षक सैय्यद मोहम्मद मेहदी व वन विभाग में कार्यरत माता दुरफेशा आब्दी की पुत्री मेराज मेहदी ने सैंट मैरीज़ कॉन्वेंट इन्टर कॉलेज प्रयागराज से सीआईएससीई बोर्ड से कक्षा 12 में 91 प्रतिशत अंक हासिल कर प्रयागराज का नाम रोशन किया। कोपत ग्रान टोला रानी मण्डी में रहने वाली मेराज मेहदी के घर पर पहुंच कर लोगों ने जहां बेटी की सफलता पर बधाई दी।

अपनी सफलता पर मेराज मेहदी ने इसका श्रेय क्लास अध्यापिका के साथ मां बाप को दिया। मेराज ने आगे की पढ़ाई जारी रखने के साथ सिविल सेवा में जाने की बात कही। समाजसेवी सैय्यद मोहम्मद अस्करी, जुलकरनैन आब्दी, दरकशां आब्दी, सैय्यादैन आब्दी ने बधाई दी।

एच के जायसवाल सभा प्रयाग ने

नीरज त्रिपाठी को किया सम्मानित

प्रयागराज(आरएनएस)। डॉक्टर के पी जायसवाल इंटर कॉलेज प्रांगण मुद्दीगंज में जयसवाल समाज द्वारा मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत, 52वीं लोकसभा इलाहाबाद के प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी को सम्मानित किया गया।

भाजपा मीडिया प्रभारी गोपाल जी मालवीय द्वारा बताया गया 52वीं लोकसभा इलाहाबाद प्रत्याशी पूर्व राज्यपाल स्वर्गीय केसरी नाथ त्रिपाठी के पुत्र नीरज त्रिपाठी को सम्मानित किया गया। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम जायसवाल समाज के अध्यक्ष पदुम जायसवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी तथा विशिष्ट अतिथि महापौर उमेश चंद्र गणेश केसरवानी, वर्तमान सांसद डॉ रीता बहुगुणा जोशी एवं मनोज जायसवाल लोकसभा प्रभारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथियों एवं विशिष्ट अतिथियों को माला पहनाकर स्वागत के साथ हुआ। मंच का संचालन जायसवाल समाज के महामंत्री सुनील जायसवाल ने किया। कोषाध्यक्ष विजय जायसवाल, उपाध्यक्ष दिलीप जायसवाल, मंत्री जयप्रकाश जायसवाल आदि जायसवाल समाज की पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से मतदान के दिन अपने मताधिकार का उपयोग कर अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने हेतु प्रेरित किया गया।

पूर्व विधायक के पुत्र के

निधन पर कांग्रेसजनों का शोक

प्रयागराज(आरएनएस)। शहर के प्रमुख कांग्रेसजनों की एक शोक सभा यूपी कांग्रेस कमेटी के पूर्व प्रवक्ता किशोर वाण्य की अध्यक्षता में अपराह्न कैम्प कार्यालय हिममतगंज में हुई।

बैठक में पूर्व विधायक हाजी मुजुतबा सिद्दीकी के बड़े बेटे अब्दुल्ला की असमय मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया है। कहा गया कि 36 वर्ष की कम उम्र में डिग्री कालेज और अन्य शिक्षण संस्थानों का कुशल संचालन करने वाले अब्दुल्ला नेक दिल होने के साथ खुश मिजाज इंसान थे। शोक सभा में दो मिनट का मौन रखा गया। प्रदेश कांग्रेस के पूर्व महासचिव फुज़ैल हाशमी, पीसीसी सदस्य हरिकेश त्रिपाठी, अरशद अली, अजय श्रीवास्तव,परवेज़ सिद्दीकी, विनय पांडेय, सरताज मोहम्मद, विनय पांडेय, मो. जावेद, अरुण चौरसिया, केशव पासी, जाहिद नेता, संजय सिंह, मो. फ़रहान आदि थे।

कालिदास मेडिकल क्रिकेट क्लब की

जीत में अंकित की धमाकेदार पारी

प्रयागराज(आरएनएस)। कालिदास मेडिकल क्रिकेट क्लब ने प्रयाग क्रिकेट क्लब के तत्वावधान में आयोजित आविद मुर्तजा स्मारक अंडर-19 क्रिकेट प्रतियोगिता में श्री सहायक क्रिकेट क्लब को 16 रन से हराकर पूर्ण अंक अर्जित किए हैं। अंकित यादव की धमाकेदार अर्धशताकीय (71 रन, 50 गेंद, नौ चौके, चार छक्के) पारी खेल अपनी टीम को जीत दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सोमवार को डीएवी कॉलेज मैदान पर टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए कालिदास मेडिकल क्रिकेट क्लब ने 35 ओवर में 194 रन (अंकित यादव 71, तन्मय केशरवानी 37, विदेश गोंड 32 रन, प्रंजल पंडेय 3/57, मो. अशर 2/26, आदित्य यादव 1/21) पर बनाए। जबकि श्री सहायक क्रिकेट क्लब की पूरी टीम 33.1 ओवर में 178 रन (मानस प्रवाल 55, कृष्णा साहू34, पार्थ वंन सहायक 14 रन, अखिलेश यादव 3/37, मो. अरमान 2/23, मो. हम्मद 2/44, तन्मय केशरवानी 1/33) पर सिमट गई। मैच में शिशिर मेहरोत्रा व अभिषेक मिश्रा ने अंपायरिंग और प्रितेश सोनकर ने स्कोरिंग की।

महाकुंभ में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की राह आसान करेगा गंगा पथ

गंगा किनारे 12 किमी लंबे पथ का 95 करोड़ से हो रहा है निर्माण

महाकुंभ में शहर को जाम की समस्या से बचाएगा गंगा पथ

प्रयागराज(आरएनएस)। प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ को दिव्य, भव्य और नव्य स्वरूप देने के लिए योगी सरकार कई नए कदम उठा रही है। इसी के तहत गंगा तट पर 95 करोड़ से गंगा पथ का निर्माण किया जा रहा है। इससे यहां आने वाले 41 करोड़ से अधिक पर्यटकों और श्रद्धालुओं को जाम की समस्या से निजात मिलेगी।

सिंचाई विभाग के सहायक अभियंता दिनेश तिवारी ने बताया कि राजधानी लखनऊ के गोमती रिवर फ्रंट की तर्ज पर प्रयागराज में भी गंगा किनारे

लगभग 12 किलोमीटर गंगा पथ का निर्माण कराया जा रहा है। यह महाकुंभ-2025 से पहले बनकर तैयार हो जाएगा। इससे कुंभ क्षेत्र में भीड़ को व्यवस्थित करने में यह काफी मददगार साबित होगा। सिंचाई विभाग की तरफ से इसका निर्माण किया जा रहा है। श्रद्धालुओं की सहूलियत के लिए गंगा नदी के दोनों किनारों पर सात खंडों में रिवर फ्रंट की तर्ज पर सड़क बनाई जा रही है। गंगा पथ आम सड़कों से बिलकुल अलग होगी। इसका निर्माण इंटर लाकिंग, बोल्डर क्रैट से

किया जा रहा है, जिसमें स्लोप पिचिंग का कार्य भी होगा। इस सड़क को आदर्श सड़क के रूप में विकसित किया जाएगा। इसके किनारे बेंच लगाई जाएगी। कई जगह जगह पर सेल्फी प्वाइंट का भी निर्माण होगा। इन क्षेत्रों में हो रहा है गंगा पथ का निर्माण

गंगा किनारे रसूलाबाद घाट से नागवासुकी मंदिर तक, सूरदास से छतनाग तक, कर्जन ब्रिज के समीप महावीर पुरी तक का निर्माण कार्य अभी चल रहा है। गंगा के दोनों किनारे पर इन सड़कों का निर्माण हो रहा है।

श्यामलाल पाल बने समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष

प्रयागराज(आरएनएस)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने श्याम लाल पाल को प्रदेश इकाई का नया अध्यक्ष घोषित किया है। श्री पाल नरेश उत्तम पटेल की जगह नये प्रदेश अध्यक्ष बनाये गए हैं। नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल जिले के प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के मोहिउद्दीन पुर गाँव के मूल निवासी हैं। इनके पिता स्व. जवाहिर लाल पाल किसान थे।

12 अक्टूबर 1960में जन्मे श्यामलाल ने इंटर तक की पढ़ाई जनसेवा इंटर कालेज से पूरी की।इनातक की पढ़ाई इलाहाबाद विश्व विद्यालय से करने के बाद सम्पूर्णंद विश्व विद्यालय से बी एड और एम एड की डिग्री हासिल की। श्यामलाल पाल ने जिस विद्यालय में शिक्षा ग्रहण की थी बाद में उसी जनसेवा इंटर कालेज मोहिउद्दीन पुर में प्रधानाचार्य पद से साल भर पहले सेवानिवृत्त हुए हैं।

सपा के जिला मीडिया प्रभारी दान बहादुर मधुर के अनुसार श्यामलाल पाल की

शिक्षण कार्य के साथ ही राजनीति में गहरी रुचि थी। उन्होंने वर्ष 1996 में और वर्ष 2007 में विधानसभा प्रताप पुर से अपना दल के टिकट पर चुनाव भी लड़ा था।

वर्ष 2007 में ही इलाहाबाद जिले के तत्कालीन सपा जिलाध्यक्ष कमल सिंह यादव के प्रयास से उन्होंने सपा के संस्थापक स्व. मुलायम सिंह यादव से मुलाकात की और सदस्यता ग्रहण करने के बाद आज तक समाजवादी पार्टी में सेवा देते रहे हैं। 2007 नेताजी के आशीर्वाद से तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष शिवपाल यादव ने उन्हें प्रदेश कार्यकारिणी में सचिव पद सौंपा। 2021में प्रदेश के महासचिव और वर्ष 2023 में प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर रहते हुए पार्टी का कार्य करते रहे।

श्याम लाल पाल के प्रदेश अध्यक्ष बनाये जाने पर आज सपा के जिला कार्यालय जार्ज टाउन में एक दूसर को मिठाई खिला कर बधाई एवं शुभकामनायें दी गईं।

बधाई देने वालों में जिलाध्यक्ष अनिल यादव, सैयद

अर्शिया शरीफ ने किया

टाप, इंटर में मिला चौथा स्थान

प्रयागराज(आरएनएस)। आईसीएसई बोर्ड परीक्षा का परिणाम सोमवार को घोषित हो गया। प्रयागराज की अर्शिया शरीफ ने इंटर की परीक्षा में टॉप कर देश में चौथा स्थान हासिल किया है। अर्शिया की इस सफलता यह संगम नगरी प्रयागराज का नाम रोशन किया है। अर्शिया गर्ल्स हाई स्कूल एंड कॉलेज की छात्रा है।

अर्शिया ने सोमवार को जारी हुए परीक्षा के नतीजे में देश के

टॉप में टॉप पांचवें स्थान पर नाम दर्ज कराते हुये प्रयागराज का नाम रोशन किया है। अर्शिया के मुताबिक सामाजिक विज्ञान में 99: अंग्रेजी में 97 और राजनीतिक शास्त्र व इतिहास में 100 में 100 अंक हासिल किया है। इन्होंने कुल 99 फीसदी अंक के साथ सफलता हासिल की है।

आईसीएसई बोर्ड परीक्षा में देश में चौथा स्थान प्राप्त करने वाली प्रयागराज की अर्शिया

शरीफ का कहना है यह जहां अनुशासन कि वहां ही सफलता है। जब तक लोगों को मंजिल न मिल पाये, उसे कोशिश करते रहना चाहिए। अपनी मंजिल को पाने के लिए परिश्रम से पीछे नहीं हटना चाहिए। अर्शिया के पिता जनरल मर्चेट की दुकान चलाते हैं। अर्शिया का सपना है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में जाकर देश की सेवा करने का जिम्मा उठाना चाहती है।

माफिया अतीक अहमद के

दोनों बेटों ने पास की परीक्षा

आईसीएससीई में दोनों के सत्र फीसदी से अधिक आए अंक

प्रयागराज(आरएनएस)। माफिया अतीक अहमद के दोनों बेटे अहजम अहमद और अबान अहमद ने इंटर और हाईस्कूल की परीक्षा पास कर ली है। सोमवार को घोषित किए गए सीआईएससीई के रिजल्ट में दोनों को 70 फीसदी से ऊपर अंक मिले हैं। अतीक के दोनों बेटे सेंट जोसेफ कॉलेज में पढ़ते हैं। पिछले साल पिता की हत्या के चलते दोनों परीक्षा नहीं दे सके थे। इस साल दोनों ने ऑफलाइन तरीके से परीक्षा देकर सफलता हासिल की। अहजम अहमद इंटर और अबान अहमद हाईस्कूल में था। दोनों ने परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। स्कूल के प्रिंसिपल ने बताया कि दोनों कभी स्कूल तो नहीं आए लेकिन हर प्रोजेक्ट को समय पर सम्मित करते थे। दोनों ने मेहनत करते हुए परीक्षा पास की है। प्रिंसिपल के अनुसार दोनों स्कूल तो नहीं आ पाए लेकिन परीक्षा देने के लिए आए थे। इन दोनों ने परीक्षा

पिता, चाचा और भाई की मौत के चलते यह दोनों परीक्षा नहीं दे सके थे और लापता चल रहे थे। इस बार दोनों परीक्षा में बैठे, लेकिन एक दिन भी स्कूल में क्लास अटेंड नहीं किया। प्रिंसिपल के अनुसार दोनों ने क्लास भले ही अटेंड नहीं किया लेकिन प्रोजेक्ट आदी समय पर जमा करते रहे।

मजलिस ए तरहीम में छलके आँसू

प्रयागराज(आरएनएस)। बख्शी बाज़ार स्थित इमामबाड़ा नाज़ि हुसैन में अन्जुमन गुन्ना ए कस्मिया बख्शी बाज़ार की ओर से जाकर ए अहल्लैत मरहूम जयार हुसैन के ईस्नाल ए सवाब को मजलिस ए तरहीम का आयोजन किया गया। शायर ए अहल्लैत, सफ़ीरे हुसैनियत, मीर ए मनक़बत, बहलोल ए हिन्द, आफताब ए निज़मत नजीब इलाहाबादी के संचालन में सैय्यद हैदर म्हेदी व अलमदार काज़मी ने सोज व सलाम गुना कर खेराजे अक़ीदत पैश की तो मौलाना आमिरु रज़िबी साहब कब्ज़िा ने मजलिस को खिताब करते हुए कहा जयार हुसैन वह अज़ीम शख़्सियत थे। जो शहर की हर छेटी बड़े मजलिसों में जिज़्र ए अहल्लैत में अपने आप को मसरूफ़ किए रहते थे। चाहे मजलिस पढ़नी हो या मस्बियाख़ानी या नैहा हर जगह जयार हुसैन मसरूफ़ ए शोहदाए कर्बला रहते थे। मजलिस में मौलाना अफ़ज़ल अब्बास, जाकिर ए अहल्लैत रज़ा अब्बास जैदी, रिज़वान जवादी, फ़रीद रज़ा, जुनक़नैन आब्दी, मक़सूद रिज़वी, ताज़ रिज़वी, काज़िम अब्बास, अहमद जावेद, मिर्ज़ा अज़ादर हुसैन, हसनैन अख़्तर, हुसैन रज़ा, रिज़वान अली अख़्तर, अरशद नक़वी, सैय्यद मोहम्मद अरकरी आदि शामिल रहे।

मतदान के दिन नहीं हो कोई समस्या: डीएम



चित्रकूट(आरएनएस)। जिला निर्वाचन अधिकारी अभिषेक आनन्द की उपस्थिति में विकास भवन के सभागार में लोकसभा सामान्य निर्वाचन को सकुशल, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण एवं पारदर्शिता से संपन्न कराने को सेक्टर व जोनल मजिस्ट्रेटो का प्रशिक्षण संपन्न हुआ।

उन्होंने कहा कि 20 मई को जनपद में मतदान होगा। भारत निर्वाचन आयोग के एमपीएस एप, मतदान प्रतिशत संकलन एप के अनुसार मतदान प्रक्रिया की जानकारी एप के माध्यम से मोबाइल पर डाउनलोड कर दिया जाना है। उन्होंने कहा कि सेक्टर मजिस्ट्रेट का रजिस्ट्रेशन एआरओ तथा सेक्टर मजिस्ट्रेट पीठासीन अधिकारियों का रजिस्ट्रेशन करेंगे। मतदान के दिन कोई समस्या न हो।

गंभीरता से प्रशिक्षण लेकर निर्वाचन सकुशल संपन्न कराएं। मतदान के एक दिन पूर्व जब पोलिंग पार्टियां रवाना होगी तो सभी बूथों का निरीक्षण करेंगे। अगर कोई समस्या है तो तत्काल निस्तारण कराएंगे। प्रशिक्षण में ईवीएम मशीन के संचालन, वॉलेट यूनिट, वीवी पैट, कंट्रोल यूनिट, मशीनों का सीरियल नंबरों का मिलान करना, मत पत्र क्रम, पोलिंग पार्टियों निर्धारित वाहनों से रवानगी, मशीनों की सीलिंग, मशीनों का रखरखाव, मांक पोल, वोटिंग कंपार्टमेंट, सीआरसी करना, वास्तविक मतदान प्रारंभ होने से पहले, वीवी पैट बैटरी बदलना, वीवी पैट बदलना, सीयू पावर ऑफ करना, ग्रीन पेपर की सीलिंग, वास्तविक मतदान की सीलिंग, एबी

सीलिंग, मतदाता पर्ची, क्लोज बटन दबाना, मतदान के दौरान विशेष परिस्थितियों, एएसडी मतदाता, चोलेज वोट, टेंडर वोट, मतदाता द्वारा मत देने से इंकार करना, प्रांक्सी द्वारा मतदान, आयु के संबंध में आपत्ति, मतदाता द्वारा मतदान प्रक्रिया का उल्लंघन, फिटबाधित एवं आसक्त मतदाताओं के संबंध में, पोस्टल बिलेट, पीवी, ईडीसी, पीठासीन अधिकारी की डायरी आदि विभिन्न बिंदुओं की जानकारी दी गई। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, जिला विकास अधिकारी आरके त्रिपाठी, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह सहित संबंधित अधिकारी एवं दोनों विधानसभा के जोनल, सेक्टर मजिस्ट्रेट मौजूद रहे।

नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की चुनौतियों और संभावनाओं पर हुआ विचार विमर्श

चित्रकूट(आरएनएस)। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के आंतरिक मूल्यांकन गुणवत्ता समिति के तत्वावधान में संपन्न दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में लिए गए निर्णयों के क्रियान्वयन पर सहमति के साथ समापन हुआ। यह कार्यशाला रिम्बल ऑफ बैरियर्स इन इन्फोमेटेशन ऑफ एनर्जी 2020 रु रिड्रेसल ऑफ प्रॉब्लम्स ऑफ्टर फीडबैक विषय पर केंद्रित रही। दो दिनों की विशिष्ट कार्यशाला में ग्रामोदय विश्वविद्यालय सहित देश के विद्वानों ने अपने विचारों और अनुभवों का आदान प्रदान किया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. पीके बाजपेई कुलपति जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा बिहार ने नई शिक्षा नीति में आ रही चुनौतियों के लिए सम्यक समाधान खोजने तथा नई शिक्षा नीति को देश के विश्वविद्यालयों में और भी प्रभावी बनाने के उपायों के क्रियान्वयन विषय पर सारगर्भित मार्गदर्शक व्याख्यान दिया। विशिष्ट अतिथि प्रो नरेश चंद्र गौतम पूर्व कुलपति ने प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सुझाव दिए। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो भरत मिश्रा ने नई शिक्षा नीति को विवि में आत्मसात करने की व्यवहारिक कार्य योजना पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में प्रो अमरजीत सिंह, प्रो शशिकांत त्रिपाठी आदि ने सहभागिता की। प्रो डीपी राय ने आभार जताया।

पैदल गस्त कर आमजन से किया वार्ता

चित्रकूट। एसपी अरुण कुमार सिंह के निर्देशन में लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत शान्ति एवं सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ बनाये रखने को थाना एवं चौकी प्रभारियों ने क्षेत्र के मिश्रित, भीड़ वाले स्थानों पर पैदल गस्त किया। पुलिस टीमों ने दुकानदारों, व्यापारियों, क्षेत्रीय नागरिकों से वार्ता कर सुरक्षा का भरोसा दिलाया। पैदल गस्त के दौरान सरकारी शराब की दुकानें, वाहनों की चेकिंग की गई।

4 के विरुद्ध गुंडा, 34 लोगों पर मीनी गुंडा एक्ट की कार्यवाही

चित्रकूट(आरएनएस)। प्रभारी निरीक्षक सरथुवा आशुतोष तिवारी ने भारतलाल पुत्र राजनारायण, रामलखन पुत्र लालजी, लालजी पुत्र नथू निषाद निवासीगण हरिशानपुर के विरुद्ध गुंडा एक्ट की कार्यवाही की है। इसके अलावा थानाध्यक्ष मारकुण्डी मनीष कुमार ने राहुल मिश्रा पुत्र शिवनारायण मिश्रा निवासी पयासी का पुरवा मजरा किहुनियां के खिलाफ गुंडा एक्ट एवं .लाल कोल पुत्र बाबाजान कोल निवासी डोडामाफी, देवमनि कोल पुत्र कौंदू कोल निवासी डोडामाफी, जगदीश कुशवाहा पुत्र भगवत प्रसाद निवासी इटवा डुडैला, भोले पुत्र भैयलाल निवासी टिकरिया, शिवकुमार कोल पुत्र रामसजीवन निवासी बगरहा मजरा इटवां डुडैला, सीताराम उर्फ बोदल पुत्र भैयालाल, राम प्रसाद पुत्र बोध कोल निवासी टिकरिया, गेंदालाल कोल पुत्र भूमिधर निवासी मारकुण्डी तथा थानाध्यक्ष भरतकूप प्रवीण कुमार सिंह ने रामप्रकाश, ओमप्रकाश पुत्रगण रामचंद्र, प्रेमचंद्र, रामचंद्र पुत्रगण लालू निवासीगण रसिन, अनिरुद्ध, निखिल पुत्रगण सीताशरण, कमाल, विमल पुत्रगण शारदा निवासीगण भैसांधा, संतोष पुत्र लखन, लखन पुत्र रामदास, गया प्रसाद पुत्र लाखन निवासीगण रम्पुरवामाफी भारतपुर, तुलसीदास पुत्र रामबहोरी, रामबहोरी पुत्र बूटी निवासीगण भरथौल, जगमोहन यादव पुत्र रामसजीवन, गया प्रसाद पुत्र शिवपूजन, रामहित पुत्र रामआश्रय, बाला प्रसाद पुत्र गंगू प्रसाद, राजा भइया उर्फ प्रमोद पुत्र बदवा, छेतानी पुत्र रघुराज निवासीगण इटखरी, राजा भइया पुत्र दादुलाल निवासी करारी, दीपक पटेल उर्फ अवधेश पुत्र रामस्वरूप निवासीगण लोखरिया व प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर रीता सिंह ने .रामभजन पुत्र अमीर निवासी गढचपा, सुनील पुत्र दहू निवासी रम्पुरिया मजरा गढचपा, सुनील उर्फ भोंडा पुत्र कौंदू निवासी रम्पुरिया, जियालाल पुत्र खिलाली निवासी नागर, शिवा पुत्र चुनू निवासी शेखापुर के विरुद्ध मिनी गुंडा एक्ट की कार्यवाही की है।

30 क्वार्टर देशी व 37 लीटर कच्ची शराब बरामद

चित्रकूट। कोतवाली कर्वी के एसआई राजीव कुमार सिंह ने टीम के साथ सुधीर निषाद पुत्र दिनेश निषाद निवासी डिलोरा को 19 लीटर कच्ची शराब व भरतकूप थाना के एसआई अजहर जमाल ने टीम के साथ ओमप्रकाश पुत्र जोहरी निवासी रौली कल्याणपुर को 18 लीटर कच्ची शराब व 30 क्वार्टर देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया है।

चोरी के लैपटोप के साथ वांछित को पकड़ा

चित्रकूट(आरएनएस)। एसपी अरुण कुमार सिंह के निर्देशन में अपराध की रोकथाम को अपराधियों की धरपकड़ को चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी एवं क्षेत्राधिकार नगर राजकमल के पर्यक्षण में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी उपेन्द्र प्रताप सिंह के मार्गदर्शन में कोतवाली पुलिस टीम ने रजिस्ट्री कार्यालय में हुई चोरी एवं आगजनी के वांछित को चोरी के लैपटोप के साथ गिरफ्तार किया है। गौरतलब हो कि घुस मैदान स्थित रजिस्ट्री कार्यालय में अज्ञात चोरों ने चोरी कर कार्यालय में आग लगा दी थी। सब रजिस्ट्रार राजेश सिंह की तहरीर पर कोतवाली कर्वी में मामला दर्ज किया गया था। पुलिस टीम ने घटना से संबंधित छह आरोपियों को पूर्व में गिरफ्तार कर जेल भेजा है। एसआई अनिल कुमार गुप्ता ने टीम के साथ पांच अप्रैल को मुकदमों की विवेचना से प्रकाश में आये आकाश यादव उर्फ रमनदीप पुत्र अलख निरंजन यादव निवासी पुरानी कोतवाली कर्वी को चोरी के लैपटॉप के साथ गिरफ्तार किया है।

खोया मोबाइल पाकर खुश हुआ युवक

चित्रकूट(आरएनएस)। कानपुर के घाटमपुर के ग्राम हरसबपुर निवासी अरुण कुमार पुत्र रामसजीवन ने 28 अप्रैल को मोबाइल खो जाने के सम्बन्ध में पोर्टल पर शिकायत की थी। थाना भरतकूप पुलिस को मोबाइल की लोकेशन प्राप्त हुयी। आरक्षी सलीम खान ने मौके पर जाकर मोबाइल को बरामद कर अरुण कुमार के सुपुर्द किया है।

सम्पादकीय

छोटी सी योजना की शुरुआत

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने घोषणा की कि सुप्रीम कोर्ट अब व्हाट्सएप संदेशों द्वारा जानकारी साझा करेगा। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की मौजूदगी के पिछले वर्षों में यह छोटी सी योजना की शुरुआत की है।

व्हाट्सएप के रोजाना की जिंदगी में शामिल होने और इसके शक्तिशाली संचार सुविधा होने की बात भी उन्होंने की। इस पहल के अंतर्गत एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड तथा शीर्ष अदालत के समक्ष निजी तौर पेश होने वाले वादियों को मुकदमा ऑनलाइन दाखिल करने, वाद सूची, आदेशों तथा निर्णयों के संबंध में जानकारी प्राप्त होगी। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने इसे क्रांतिकारी कदम बताते हुए इसकी सराहना की। प्रधान न्यायाधीश ने व्हाट्सएप नंबर साझा करते हुए स्पष्ट किया कि इस पर कॉल या संदेश प्राप्त नहीं होंगे। निरुसंधे यह सबसे बड़ी अदालत को पेपरलेस बनाने की तरफ उठा बड़ा कदम है।

तकनीक संबंधी सुविधाओं को जितनी जल्दी हो सके रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल कर लेना उचित होता है। प्रधान न्यायाधीश निरंतर अदालती काम को लेकर ऐसी व्यवस्थाएं दे रहे हैं। उन्हें सुप्रीम कोर्ट जजों में सबसे ज्यादा फैंसले लिखने का रूतबा प्राप्त है। छह वर्ष के भीतर 513 फैंसले लिख चुके हैं।

न्याय व्यवस्था को सुचारू और पारदर्शी बनाने के लिए समय-समय पर उन्होंने बड़े कदम उठाए हैं। विभिन्न फैंसलों को उन्होंने क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद करवाने की व्यवस्था करके तथा हिन्दी, तमिल, उडिया और गुजराती में फैंसलों का अनुवाद करने के लिए समिति का गठन भी किया। देश में 48 करोड़ से अधिक व्हाट्सएप प्रयोगकर्ता हैं, जो 2025 तक 80 करोड़ तक पहुंचने का अंदाजा है। हालांकि व्हाट्सएप मेटा टेक्नॉलाजी कंपनी की सुविधा है, जिसके सीईओ मार्क जकरबर्ग हैं। किसी भारतीय संचार संस्थान को इस जरूरत को समझते हुए आगे कदम बढ़ाने की सख्त जरूरत है। सरकार, देश के अन्य बड़े संस्थान और गोपनीय दस्तावेज के लिए देसी तकनीक का प्रयोग किया जाना उचित है। तकनीक के मामले में हम दूसरों पर निर्भर होते जा रहे हैं। यह बड़ी चुनौती है। बावजूद इसके तकनीक का इस्तेमाल सुविधाओं के लिए करना वक्त की मांग है, इसके बिना काम नहीं चल सकता।

समूचा विश्व भयाक्रांत

ललित गर्ग

शांति के तमाम उपायों के बीच दुनिया भर में सैन्य खर्च, शस्त्रीकरण एवं घातक हथियारों की होड़ खतरे की घंटी हैं। शस्त्रीकरण के भयावह दुष्परिणामों से समूचा विश्व भयाक्रांत है। हर पल आणविक हथियारों के प्रयोग को लेकर दुनिया डर के साये में जी रही है। इसीलिए आज अयुद्ध, निशस्त्रीकरण एवं शांति की आवाज चारों ओर से उठ रही हैं। शक्ति संतुलन के लिए शस्त्र-निर्माण एवं शस्त्र संग्रह की बात से किसी भी परिस्थिति में सहमत नहीं हुआ जा सकता क्योंकि इससे अपव्यय तो होता ही है, साथ ही गलत हथियारों के हाथों में पड़कर दुरुपयोग की आशंकाएं बढ़ जाती हैं। ताजा घटनाक्रम को देखें तो एक ओर रूस और यूक्रेन आमने-सामने हैं, दूसरी तरफ इज़राइल और ईरान के बीच तल्लू भी चरम पर है। चीन और ताइवान के बीच भी रह-रह कर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। ऐसे माहौल में सवाल स्वाभाविक है कि क्या सचमुच दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ते हुए घातक हथियारों की प्रयोगभूमि बन रही है? सवाल और भी हैं। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च

इंस्टीट्यूट की हथियारों पर ताजा रिपोर्ट ऐसे ही सवाल खड़े कर रही है। दुनिया सीधे-सीधे दो खेमों में बंट गई है। स्टॉकहोम की रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले ही नहीं, डराने वाले भी हैं। शांति के तमाम उपायों के बीच दुनिया भर में सैन्य खर्च का बढ़ना एवं नये-नये हथियारों का बाजार गरम होना, विंताजनक है। रिपोर्ट में खास बात यह है कि दुनिया में सर्वाधिक सैन्य खर्च करने वाले देशों में भारत चौथे नंबर पर बरकरार है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश बन चुका है। रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है। भारत ने बीते पांच साल में दुनिया में सबसे ज्यादा हथियार खरीदे। रिपोर्ट में बताया गया है कि यूरोप का हथियार आयात 2014-18 की तुलना में 2019-23 में लगभग दोगुना बढ़ा है, जिसके पीछे रूस-यूक्रेन युद्ध बड़ा कारण माना जा रहा है। इसके अलावा, पिछले पांच वर्षों में सबसे ज्यादा हथियार एशियाई देशों ने खरीदे। इस लिस्ट में रूस-यूक्रेन युद्ध ने देश के रक्षा निर्यात को काफी प्रभावित किया है। इस कारण पहली बार रूस हथियार निर्यात में तीसरे स्थान पर पहुंच गया है तो अमेरिका पहले और फ्रांस दूसरे नंबर पर हैं। पिछले 25

सालों में पहली बार अमेरिका एशिया और ओशिनिया का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता रहा। अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। अब तो दुनिया के साथ-साथ अमेरिका स्वयं ही हथियारों एवं हिंसक मानसिकता का शिकार है। अमेरिका ने दुनिया पर आधिपत्य स्थापित करने एवं अपने शस्त्र कारोबार को पनपाने के लिए जिस अपसंस्कृति को दुनिया में फैलाया है, उससे पूरी मानवता पीड़ित है। अमेरिका ने नई विश्व व्यवस्था (न्यू वर्ल्ड ऑर्डर) की बात की है, खुलेपन की बात की है। लगता है कि 'विश्व मानव' का दम घुट रहा है, और घुटन से बाहर आना चाहता है। विडंबना देखिए, अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है, लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहां की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी देश में नहीं हैं। कई वाक्ये हो चुके हैं कि किसी रेस्तरां, होटल या फिर जमावड़े पर अचानक किसी सिरफिरे ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोगों को मार

डाला। 2014 में अमेरिका में हत्या के दर्ज सवा चौदह हजार मामलों में अडसठ फीसद मामलों में बंदूकों का इस्तेमाल किया गया था। दरअसल, मनुष्य के भयभीत मन को युद्ध एवं हथियारों की विभीषिका से मुक्ति दिलाना जरूरी है। युद्धरत देशों में शांति स्थापित कर, युद्ध-विराम करके विश्व को निर्भय बनाना चाहिए। निश्चय ही यह किसी एक या दूसरे देश की जीत नहीं, बल्कि समूची मानव-जाति की जीत होगी। यथार्थ यह है कि अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, पर अंधापन मृत्यु-विनाश की ओर। रूस ने अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का अहसास गलत समय पर गलत उद्देश्य के लिए कराया है। युद्ध से तबाही रूस-यूक्रेन की नहीं, बल्कि समूची दुनिया की तबाही होगी, क्योंकि रूस परमाणु विस्फोट करने को विवश होगा जो दुनिया की बड़ी विंता का सबब है। बड़े शक्तिसंपन्न देशों को युद्ध विराम के प्रयास करने चाहिए। लेकिन प्रयास है कि जो देश हथियारों के निर्माता हैं, वे क्यों चाहेंगे कि युद्ध विराम हो। जब तक शक्तिसंपन्न देशों की शस्त्रों के निर्माण एवं निर्यात की बूख शांत नहीं होती तब तक युद्ध की आशंकाएं मैदान में, समुद्र में आकाश में तैरती रहेंगी।

आज का राशिफल

मेष राशि- आज का दिन फेवरेबल रहने वाला है। स्वास्थ्य के लिहाज से दिन अच्छा रहेगा। आज आपके बढ़ते खर्चे परेशानी का कारण बन सकते हैं इसीलिए बजट बनाकर चलने का प्रयास करें। किसी संपत्ति का सौदा जल्दबाजी में ना करें। राजनीति से जुड़े लोगों को आज किसी समारोह में भाग लेने का मौका मिलेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति का मार्ग प्रसस्त होगा। आपके संतान के करियर या शिक्षा से संबंधी किसी समस्या का समाधान मिलेगा। आज आप ऑनलाइन शॉपिंग करेंगे।

शुभ रंग- नीला
शुभ अंक- 4
वृष राशि-आज का दिन आपके लिए निश्चित रूप से फलदायक रहने वाला है। आपकी योजनाओं को गति मिलेगी। आज नए लोगों से मुलाकात होगी, उनसे आपको कुछ अच्छा सीखने को मिलेगा। आज आपको बड़ों का साथ व सहयोग भरपूर मात्रा में मिलेगा। आज आपकी शिक्षा में आ रही परेशानी से छुटकारा मिलेगा, आपको खुशी होगी। आज आप किसी मांगलिक कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे। धार्मिक कार्यों के प्रति आस्था व विश्वास से आगे बढ़ेंगे।

शुभ रंग- भूरा
शुभ अंक- 1
मिथुन राशि-आज आपका दिन, आपके परिवार के लिए खुशियां लाने वाला है। परिवार में आपके अच्छे काम की तारीफ होगी। महिलाओं के लिए आज का दिन बेहद खास रहने वाला है। आज आपके पास बिजनेस को आगे बढ़ाने का अच्छा मौका है। कम्पटीशन की तैयारी कर रहे छात्रों को तैयारी जारी रखनी चाहिए। जिस व्यक्ति की आपने कभी मदद की थी वह आज आपके काम आएगा। शिक्षकों के लिए आज का दिन बेहतरीन रहने वाला है। अध्यात्मिक कामों में आपकी रुचि बढ़ेगी। आज अपनी क्षमता पर विश्वास करने से आपके सभी काम बनेंगे।

शुभ रंग- लाल
शुभ अंक- 4
कर्क राशि-आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज आप एक से अधिक स्रोतों से आय प्राप्त करेंगे। आज निवेश संबंधी मामलों को गति मिलेगी। आज किसी अजनबी पर सोच समझकर भरोसा करें। प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र में आज आप आगे बढ़ेंगे। आज आपके दांपत्य जीवन में खुशहाली बढ़ेगी। नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को आज किसी दोस्त के सहयोग से अच्छी नौकरी मिलेगी। छात्रों के लिए आज का दिन शानदार रहने वाला है, किसी प्रतियोगी परीक्षा का परिणाम आपके पक्ष में आयेगा। लवमेट आज कही घूमने जाएंगे।

शुभ रंग- ग्रे
शुभ अंक- 6
सिंह राशि-आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। ऑफिस के उच्चधिकारियों का सहयोग मिलने से आपका इम्पोर्टेंट काम बन जायेगा। पैसों के मामलों में लोगों पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करने से बचना चाहिए। आज जीवनसाथी के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करने का प्लान कर सकते हैं। अगर आपको कोई समस्या है तो जल्द ही उसका समाधान आपको मिल जायेगा। छात्र आज अपने करियर को बेहतर बनाने के लिए किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेंगे।

शुभ रंग- काला
शुभ अंक- 7
कन्या राशि-आज के दिन आपको रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। आज आपके अच्छे व्यवहार से समाज में अच्छी पहचान बनेगी। आज आप घर पर डेकोरेशन का काम भी करवा सकते हैं। व्यापार में आज का दिन धन लाभ देने वाला है। आज अपनी समझ बूझ से आप परिवार की एकता को बरकरार रखने में कामयाब होंगे। आपका सकारात्मक रवैया आपको आर्थिक सफलता की ओर ले जायेगा। स्पोर्ट से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन शानदार रहने वाला है।

शुभ रंग- पीला
शुभ अंक- 5
तुला राशि-आज आपका दिन बहुत बढ़िया रहने वाला है। आज दूसरों को जितना ज्यादा महत्व देंगे, आपको भी उतना ही महत्व मिलेगा। मार्ग्रेन की समस्या से आज आपको काफी राहत मिलेगी। पैतृक संपत्ति से धन लाभ मिलने के योग बन रहे हैं। लम्बे समय से चल रही योजना में आज कुछ नए चेंजेस कर सकते हैं। समाज में आपके द्वारा किए गए कार्यों की काफी सराहना होगी। मेडिकल की पढाई कर रहे लोगों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

शुभ रंग- लाल
शुभ अंक- 2
वृश्चिक राशि-आज आपका दिन नई उमंगों के साथ शुरू होने वाला है। जो लोग बेकरी का बिजनेस करते हैं, उन्हें आज उम्मीद से ज्यादा लाभ हो होगा। माताएं अपने बच्चों को कुछ नया सिखाएंगी, जिससे बच्चों में नए विचार आएंगे। शाम का समय खुशियों से भरा रहेगा। आज यात्रा पर जाने के योग बन रहे हैं। लवमेट के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है। अविवाहित जातकों को विवाह के लिए अच्छे रिश्ते आयेंगे। छात्रों को सफलता मिलने के योग बने हुए हैं।

शुभ रंग- ग्रे
शुभ अंक- 4
धनु राशि-आज आपके दिन की शुरुआत आपके अनुकूल होने वाली है। आज आप ऑफिस में खूब मेहनत करेंगे। आपको कोई नयी जिम्मेदारी मिल सकती है। इस राशि के मनोरंजन उद्योग से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन फायदेमंद होगा। आज परिवार के किसी सदस्य को बड़ी सफलता हासिल होगी। आपके घर में उत्सव का माहौल बना रहेगा। आज दाम्पत्य जीवन खुशहाल रहने वाला है। छात्रों को सफलता मिलने के योग बने हुए हैं।

शुभ रंग- मेहरून
शुभ अंक- 3
मकर राशि-आज आपका दिन खुशनुमा रहने वाला है। कार्यक्षेत्र में जो भी रुकावट आएंगी, उनसे आप कुछ सीख सकते हैं। कारोबार में कुछ नया करने के लिए चल रहे प्रयास सफल होंगे। दूसरों की मदद करने से समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जमीन जायजाद के मामले में लाभ मिलेगा। साझेदार के साथ मिलकर किये गये कार्यों से ज्यादा लाभ मिलेगा। आज दोस्तों के साथ पार्टी करेंगे। आज आपके व्यापार से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले लेने पड़ सकते हैं।

शुभ रंग- गोलडन
शुभ अंक- 2
कुंभ राशि-आज आपका दिन बढ़िया गुजरेगा। किसी काम को पूरा करने के लिए शॉर्टकट तरीके अपनाने से बचें। आज बिजनेस में बढ़ोतरी होगी। माताएं बच्चों को मोरल स्टोरी सुनाएंगी। काम को पूरा करने में मन लगायेंगे और कुछ क्रिएटिव 2शब्दम करने का प्रयास करेंगे। आपके पुत्र के करियर से रिलेटेड कोई अच्छी खबर सुनने को मिल सकती है। लवमेट के लिए आज का दिन अच्छा है। जीवनसाथी आज आपके कार्यों में सहयोग करेंगे। बच्चे खेल-कूद में व्यस्त रहेंगे।

शुभ रंग- हरा
शुभ अंक- 5
मीन राशि-आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। आज किसी के बहकावे में न आये और अपने काम के प्रति सतर्क रहें। आपके परिवार में नन्हें मेहमान आने के योग बन रहे हैं। आज आपके परिवार में खुशियों का माहौल बनेगा। आज आपको किसी महत्वपूर्ण चर्चा में शामिल होने का मौका मिलेगा, जिसमें आपकी सहभागिता अच्छी खासी रहेगी। कोई प्रिय मित्र आपसे किसी विशेष विषय को लेकर बातचीत कर सकता है।

शुभ रंग- पीला

विरासत के सहारे जीत की तलाश करते हुए राहुल गांधी



कांग्रेस नेता राहुल गांधी उत्तरप्रदेश की अमेठी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ पाने की हिम्मत के बाद आखिर परम्परागत रायबरेली से नामांकन दाखिल कर दिया। यह बात सही है कि राहुल गांधी के अमेठी छोड़ने के बाद कांग्रेस राजनीति में कोई इतिहास नहीं हो सन्देश देने में सफल नहीं हो रही थी, जिसके कारण कांग्रेस के कई नेता अमेठी के बारे में बोलने से किनारा करने लगे थे। अब राहुल गांधी अपने दादा फिरोज खान, दादी इंदिरा गांधी और माँ सोनिया गांधी की विरासत को बचाने के लिए मैदान में आ गए हैं। यहाँ सवाल यह नहीं है कि राहुल गांधी और उनकी कांग्रेस ने रायबरेली को क्यों चुना, बल्कि सवाल यह है कि राहुल गांधी ने अमेठी को क्यों छोड़ा। क्या वास्तव में राहुल गांधी को फिर से अपनी पराजय का डर लगने लगा था? अगर यह सही है तो फिर ऐसा क्यों है कि राहुल गांधी हर बार अपने लिए सुरक्षित स्थान की तलाश क्यों करते हैं। उल्लेखनीय है कि जब कांग्रेस

नेता राहुल गांधी को अमेठी में अपनी जमीन खिसकती दिखाई दी, तब उन्होंने एकदम सुरक्षित लगने वाली सीट केरल की वायनाड को चुना। वहाँ से चुनाव जीते जरूर, लेकिन अमेठी की हार कांग्रेस परिवार की हार थी, जिसे कांग्रेस आज तक भुला नहीं पायी है। ऐसे में कांग्रेस द्वारा राहुल गांधी को अमेठी से चुनाव लड़ाना खतरे से खाली नहीं था। कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी के नामांकन जमा करने के समय जिस प्रकार से बड़े नेताओं का जमघट लगा, वह भले ही जनता में प्रभाव डालने के लिए किया हो, लेकिन इससे यह भी राजनीतिक सन्देश सुनाई दे रहा है कि अब रायबरेली की सीट भी कांग्रेस के लिए आसान नहीं है। यह इसलिए भी कहा जा सकता है कि वहाँ लगभग सभी बड़े नेता उपस्थित हुए। यहाँ तक कि प्रियंका वाड़ा के पति रोबर्ट वाड़ा भी कांग्रेस के विरासती राजनेता के तौर पर उपस्थित हुए। ऐसे में एक सवाल यह भी आता है कि एक ही परिवार के चार व्यक्तियों को कांग्रेस के बड़े

नेताओं के रूप में प्रचारित करना निरसंदेह कांग्रेस पर परिवारवादी होने की ही प्रमाणित करता है। जिस परिवारवाद के आरोप के कारण कांग्रेस असहज हो जाती है, आज कांग्रेस ने फिर से उसी रास्ते पर कदम बढ़ाने को अपनी नियति मान लिया है। हालांकि कांग्रेस ने आनन फानन में राहुल गांधी को रायबरेली से उम्मीदवार बनाकर यह तो सन्देश दिया ही है कि भारत में रायबरेली ही राहुल गांधी के लिए सबसे सुरक्षित लोकसभा सीट है। यहाँ कांग्रेस का परम्परागत मतदाता है, वहीं यह क्षेत्र नेहरू गांधी परिवार की विरासत भी है। कहा जाता है कि दुनिया का कोई भी व्यक्ति अगर अपनी विरासत को विस्मृत कर देता है, तो उसे नए सिरे से अपनी जमीन तैयार करनी पड़ती है। और अगर विरासत के आधार पर अपने कदम बढ़ाता है तो उसकी आधी राह आसान हो जाती है। राहुल गांधी के सामने तमाम सवाल होने के बाद भी ऐसा लगता है कि उन्होंने अपनी आधी बाधा को पार कर लिया है। रायबरेली

को कांग्रेस का गढ़ इसलिए भी माना जाता है कि क्योंकि यहाँ से इंदिरा गांधी के पति फिरोज खान दो बार सांसद रहे, उसके बाद इंदिरा गांधी भी सांसद रहीं। अब पिछले पांच बार से सोनिया गांधी लोकसभा का चुनाव जीती हैं। मजददार बात यह भी है कि वर्ष 1977 के आम चुनाव में जनता लहर में इंदिरा गांधी को भी पराजय का दंश भोगना पड़ा। उसके बाद एक बार भाजपा ने भी परचम लहराया है। इसलिए यह कहा जाना कि रायबरेली में कांग्रेस आसानी से विजय प्राप्त करेंगी, कठिन ही है। आज कांग्रेस की स्थिति देखकर यह भी कहने में गुरेज नहीं होना चाहिए कि आज की कांग्रेस के पास इंदिरा गांधी जैसा नेता नहीं है। जब इंदिरा गांधी चुनाव हार सकती हैं, तब आज तो कांग्रेस की स्थिति बहुत कमजोर है। ऐसा तो तब हुआ, जब उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी का कोई अस्तित्व नहीं था, इसलिए कांग्रेस उत्तरप्रदेश में अच्छी खासी जीत हासिल करती थी। लेकिन अब उत्तरप्रदेश का

राजनीतिक परिदृश्य बदला हुआ है। अब कांग्रेस के पास पहले जैसा वोट बैंक भी नहीं है, हालांकि इस चुनाव में सपा का समर्थन कांग्रेस के पास है, इसलिए चुनाव में सपा के कार्यकर्ता भी राहुल का प्रचार करेंगे, ऐसे में निश्चित ही कांग्रेस का वजूद बढ़ेगा ही, यह तय है, लेकिन कितना बढ़ेगा, यह कहने में जल्दबाजी ही होगी। वर्तमान में कांग्रेस के लिए यह पेचीदा सवाल ही था कि कांग्रेस की ओर से अमेठी और रायबरेली से किसको प्रत्याशी घोषित किया जाए, क्योंकि इन दोनों सीटों पर प्रथम तो गांधी परिवार का पुख्ता दावा बनता था। इसलिए दोनों क्षेत्रों में से किसी एक से प्रियंका को चुनाव मैदान में उतारने की क्वायद भी की जा रही थी, लेकिन प्रियंका को इस बार चुनाव लड़ने से दूर कर दिया। लेकिन सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या राहुल गांधी के रायबरेली से उम्मीदवार बनाए जाने के बाद कांग्रेस अमेठी के चुनाव को गंभीरता से लेगी, क्योंकि अब

कांग्रेस का पूरा जोर राहुल गांधी को जिताने में लगेगा। राहुल गांधी को जिताना कांग्रेस की मजबूरी है, क्योंकि अब राहुल गांधी ही नहीं, पूरी कांग्रेस की साख दांव पर लगी है। अगर कांग्रेस रायबरेली से चुनाव हारती है तो देश में कांग्रेस के बारे में गलत सन्देश जायेगा। यहाँ पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी आ रहा है कि राहुल गांधी द्वारा पिछले चुनाव में भी दो स्थानों से चुनाव लड़े थे, जिसमें अमेठी में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। अब वायनाड से उम्मीदवारी के बाद रायबरेली की रुख करके फिर से संदेह को जन्म दिया है। ऐसा लग रहा है कि इस बार वायनाड का चुनाव बहुत ही टक्कर का माना जा रहा है। कुछ खबरें तो राहुल गांधी के हारने तक की बात कह रही हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि इसलिए ही राहुल गांधी को फिर से दो स्थानों से चुनाव लड़ा जा रहा है। राहुल गांधी का उत्तरप्रदेश से चुनाव लड़ना कोई नया नहीं है, वे अमेठी से भी चुनाव लड़ चुके हैं।

सबसे पहले मतदान करें इसके बाद काम करें

कुठौद (जालौन)रू-विकासखंड कुठौद की ग्राम पंचायत बिचौली में विद्यार्थियों ने मतदाता जागरूक रैली निकाली लोकसभा चुनाव की पांचवें चरण की मतदान तिथि 20 मई जैसे-जैसे नजदीक आ रही है वैसे ही माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा विभाग के मतदाता जागरूकता अभियान ने



भी तेजी पकड़ ली है उसी क्रम में ग्राम बिचौली में विद्यार्थियों के द्वारा शत प्रतिशत मतदान करने के लिए रैली निकाली जिसमें विभिन्न प्रकार के नारे लगाए गए जैसे कि सबसे पहले मतदान करो इसके बाद फिर काम करो, बने देश के भाग विधाता अब जागो प्यारे मतदाता आदि नारे लगाते हुए बी-आर-सी- मदारीपुर के ग्राम बिचौली में श्री जनता विद्या मंदिर जूनियर हाई स्कूल बिचौली व प्राथमिक विद्यालय बिचौली के शिक्षकों व विद्यार्थियों ने गांव के घर-घर पहुंच कर लोगों को मतदान का महत्व बताया और मतदान करने के लिए सभी को प्रेरित किया ग्राम बिचौली के ग्राम प्रधान महेश कुमार व शिक्षकों ने मतदाता जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया और गांव के लोगों को 20 मई को मतदान करने के लिए प्रेरित किया प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक शिव बहादुर ने मतदाता जागरूकता अभियान के तहत लोगों से कहा कि भारत एक मजबूत लोकतांत्रिक देश है भारत के नागरिकों को शत प्रतिशत मतदान देकर एक सशक्त सरकार का निर्माण करने में अहम भूमिका निभानी चाहिए। इस मौके प्रधानाध्यापक शिव बहादुर, शिक्षक आदेश द्विवेदी, राधे श्याम सक्सेना, कुलदीप सक्सेना उत्कर्ष अवस्थी रेखा चौहान, संख्या यादव, ग्राम प्रधान महेश कुमार, ग्राम पंचायत अधिकारी आदि लोग मौजूद रहे।

सिरसा कलार में पंचायत भवन का निर्माण कार्य हुआ पूर्ण,

कुठौद जालौन, विकासखंड कुठौद की ग्राम पंचायत सिरसा कलार में पंचायत भवन पर चल रहा निर्माण कार्य हुआ पूर्ण सचिवालय पर उपस्थित

ग्रा.पं. सिरसा कलार वि.स



अधिकारी वेद प्रकाश ने बताया कि पंचायत भवन का चल रहा निर्माण कार्य मय लिखाईं पुताईं को पूरा हो गया है ग्राम प्रधान ने बताया कि ग्राम पंचायत कार्यालय पर ग्राम स्तर के समस्त कार्य जल्द से जल्द शुरू किए जाएंगे जैसे की वृद्धावस्था पेंशन, निराश्रित महिला पेंशन फॉर्म ऑनलाइन की सुविधा जल्द से जल्द शुरू की जाएगी है ग्राम प्रधान ने बताया कि समस्त ग्राम सभा बासियों को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा ग्राम सभा स्तर का सभी कार्य सचिवालय पर किया जाएगा

पहले मतदान फिर जलपान निकाली जागरूकता रैली ग्राम प्रधान 20 मई को जाना है वोट डालने

माधोगढ जालौन विकासखंड माधोगढ की ग्राम पंचायत गोरा भूमिका में जिला अधिकारी के नेतृत्व में मतदाता जागरूकता अभियान के दौरान बच्चों ने रैली निकालकर लोगों को जागरूक किया कि वोट डालने जाना है अपना फर्ज निभाना



है ग्राम प्रधान धर्मेन्द्र प्रजापति ने मतदाताओं को जागरूक करते हुए कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए सभी मतदाताओं को अपनी मताधिकार का उपयोग हर हाल में करना है आपके वोट से सरकार बनती है सरकार हम सबको विकास कानून आदि की रक्षा देती है सचिव सुमित यादव ने कहा कि सभी लोग अपने-अपने वोट की चोट से सरकार बनाएं आपका वोट अमूल है इसे आप लोकतंत्र के हित में जरूर उपयोग करें इस मौके पर शिक्षक रवीप प्रमारी अजय सिंह भदौरिया गजेन्द्र, शिवम नाथराम, प्रीतम, आंगनवाड़ी एवं समस्त स्टाफ ग्रामीणों के साथ स्कूली बच्चों की उपस्थित रहे

इंडियन हुमन राइट्स काउंसिल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री बने श्री सुरेंद्र प्रकाश वर्मा

दहकती खबरें आज लखनऊ में इंडियन हुमन राइट्स काउंसिल के राष्ट्रीय पदाधिकारी के द्वारा श्री सुरेंद्र प्रकाश वर्मा जी को इंडियन हुमन राइट्स काउंसिल का राष्ट्रीय संगठन मंत्री नियुक्त किया गया। राष्ट्रीय संगठन मंत्री बनने के बाद श्री सुरेंद्र प्रकाश वर्मा जी ने बताया की संपूर्ण भारतवर्ष में समाज के लिए और मानव अधिकारों के लिए सभी प्रदेशों में वह सभी जिलों में पदाधिकारी नियुक्त किए जाएंगे और इंडियन हुमन राइट्स महिलाओं बच्चों शिक्षा में मेडिकल में सभी विभागों में मानव अधिकारों को दिलाने का कार्य करेगा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हीरा सिंह भदौरिया जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अरविंद कुमार शर्मा, राष्ट्रीय सचिव श्री विमल शर्मा, वरिष्ठ राष्ट्रीय मीडिया प्रमारी श्री अमित सिंह तोमर, राष्ट्रीय मीडिया प्रमारी अविनाश गुप्ता, जिला अध्यक्ष लखनऊ रामप्रवेश यादव, नगर अध्यक्ष प्रांशु साहू जी जिला पदाधिकारी सचिन जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री सत्येंद्र जी, प्रदेश उपाध्यक्ष जितेंद्र सिंह, वरिष्ठ मंडल प्रमारी श्री नैमिष लाल यादव जी सहित इंडियन हुमन राइट्स मानवाधिकार संगठन के समस्त अधिकारियों ने श्री सुरेंद्र प्रकाश वर्मा जी को राष्ट्रीय संगठन मंत्री बनाए जाने पर बहुत-बहुत बधाइयां और शुभकामनाएं दी और श्री सुरेंद्र प्रकाश वर्मा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

दिक्षा कनक अल्फा सल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के शुभारम्भ पर जानी मानी प्रसिद्ध हस्तियों ने किया शिरकत

भारतीय पत्रकार एवं मानवाधिकार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेन्द्र बहादुर सिंह बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम में शामिल हुए और फीता काट कर किया शुभारम्भ

लखनऊ 11 तेलीबाग रायबरेली रोड स्थित सेक्टर 12 कुदावन कालोनी में दीक्षा कनक अल्फा सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी का शुभारम्भ धूम धाम से मनाया गया जिसमें जानी मानी प्रसिद्ध हस्तियों ने शिरकत किया और कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाई यह कम्पनी जमीन, मकान, सहित अन्य प्रॉपर्टी खरीदने बेचने के लिये बनाई गई है जिसका संचालन उमेश त्रिपाठी, जितेन्द्र राय, अनुराग पाण्डेय द्वारा किया जा रहा है, भारतीय पत्रकार एवं मानवाधिकार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेन्द्र बहादुर सिंह बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम में शामिल होकर फीता काट कर दिक्षा कनक अल्फा सल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी का शुभारम्भ किया, कम्पनी के संचालक उमेश त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि जितेन्द्र बहादुर सिंह को पुष्प गुच्छ देकर माला पहना कर तिलक



भारतीय पत्रकार एवं मानवाधिकार परिषद, उत्तर प्रदेश विशेष कार्यधिकारी एम एल त्रिपाठी, लखनऊ मण्डल सचिव बिनू उर्फ विपिन यादव, मण्डल संयुक्त सचिव मुकेश बाजपेयी, सदस्य मोहम्मद अकील, सहित तमाम पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय

अध्यक्ष जितेन्द्र बहादुर सिंह के साथ कार्यक्रम में पहुंच कर अपनी अहम भूमिका निभाई कम्पनी के संस्थापक और संचालन कर्ताओं ने सभी का तिलक लगा कर माला पहना कर भव्य स्वागत किया और मान बढ़ाया इसके उपरान्त सभी ने एक साथ बैठ कर जल पान किया।

राम विरोधियों की दुर्गति तय है - योगी आदित्यनाथ

दहकती खबरें ब्यूरो नरेंद्र शुक्ला हरदोई शाहबाद में राष्ट्रपिता मु यु इंटर कालेज के भेदान में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भगवान के विरोधियों की दुर्गति तय है। सीएम योगी ने कहा कि सृष्टि के प्रारंभ से ही दो प्रकार के मानव रहते आए हैं। एक वे जीव हैं जो श्रीहरि विष्णु के विरोधी हैं और दूसरा वे, जो ईश्वरीय सत्ता के स्नेही हैं। एक तरफ ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास करने वाली भाजपा है तो दूसरी तरफ राम का द्रोह करने वाले। कांग्रेस ने अपने प्रकाश के खिलाफ इसलिए कार्रवाई कर दी, क्योंकि वे रामलला का दर्शन करने गई थीं। कांग्रेसियों की मति मारी गई है, जो भगवान का विरोध कर रहे हैं। इनकी दुर्गति तय है। हरदोई में सांसद व भाजपा प्रत्याशी जयप्रकाश रावत के लिए सोमवार को शाहबाद में आयोजित जनसभा

में भारी भीड़ देखकर आनंदितम सीएम ने कहा कि भीषण धूप में गर्मी व लू की परवाह किए बिना आप भाजपा को आशीर्वाद देने आए हैं। आपका उत्साह बता रहा कि



आएंगे फिर मोदी ही। पूरे देश में जनता कह रही है कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। राम को लाने रामभक्त ही आएंगे, रामद्रोही नहीं। उन्होंने अपने उद्बोधन में हरदोई में मेडिकल कॉलेज खोले जाने तथा गंगा एक्सप्रेसवे की चर्चा

करते हुए अनेक जनहितकारी योजनाओं के बारे में भी बात की। इस अवसर पर आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल, उच्च शिक्षा राज्य मंत्री रजनी तिवारी, भाजपा नेता नरेश अग्रवाल, अशोक बाजपेयी, माधवेंद्र प्रताप सिंह, जिलाध्यक्ष अजीत सिंह, मुकुल सिंह, व्यापार प्रकोष्ठ के जिला संयोजक नवनीत गुप्ता सहित हजायों की संख्या में भाई बहिनें उपस्थित रहे।

मण्डी हुई खाली, विधानसभा वार बने स्ट्रॉंग रूम

सुमेरपुर हमीरपुर। लोकसभा चुनाव के लिए कस्बे की नवीन गल्ला मंडी पूरी तरह से खाली होकर चुनाव संभन कराने के लिए तैयार होने लगी है। हमीरपुर सदर एवं राठ (अनुसूचित) विधानसभा सीटों के लिए बनाए गए स्ट्रॉंग रूम के बाहर बैरिकेडिंग का कार्य पूर्ण हो गया है। साथ ही सभी खराब सड़कों को मरम्मत कराकर उनको चकाचक बना दिया है। व्यवस्था को इस तरह से अंजाम दिया जा रहा है कि यहां परिदा भी पर नहीं मार सकता है। हमीरपुर लोकसभा का मतदान पांचवें चरण में प्रस्तावित है। चुनाव-असल प्रक्रिया नवीन गल्ला मंडी में संपन्न होगी। इसके लिए प्रशासन ने

गल्ला मंडी को पहली मर्तबा पूरी तरह से खाली कराया है। मंडी खाली होने के



बाद प्रशासन की ओर से तैयारियां जारी है। जिले की दोनों विधानसभा सीटों की इंडीएम मशीनों के लिए अलग-अलग स्ट्रॉंग रूम बनाकर चारोंतरफ से बैरिकेडिंग

कराकर सुखित किया है। अन्य कार्यों के लिए बैरिकेडिंग का पूरा खाका तैयार करके चिह्नकन किया गया है ताकि समय रहते कार्य को पूर्ण कर सकें। मंडी की खराब सड़कों को चकाचक कर दिया गया है। 19 मई को मतदान के लिए यहां से पोलिंग पार्टियों को रवाना किया जाएगा।

हाईप्रोफाइल चोरी की जांच क्षेत्राधिकारी को

सुमेरपुर हमीरपुर। गत माह की 13-14 अप्रैल की रात क्षेत्र के ग्राम अतरैया में पीडब्ल्यूडी एवं मनरेगा योजना के जेई के पेट्रुक आवास में हुई लाखों रुपए की चोरी में चोरों के द्वारा गांव के एक व्यक्ति पर चोरी की घटना कबूल करने का दबाव बनाने के प्रकरण की जांच पुलिस अधीक्षक ने सीओ सदर को सौंपी है। गत माह 13-14 अप्रैल की रात पीडब्ल्यूडी के अवर अभियंता पुष्पेंद्र कुमार के अतरैया स्थित आवास से अज्ञात चोरों ने नवविवाहित बहन एवं मां के करीब 20 लाख के जेवरात चोरी कर लिए थे। गत 30 अप्रैल को जेवरात का एक डिब्बा कन्सू पुत्र मुरलिया के घर पर फेंका गया था। यह मकान दरस्सी के मकान के बगल में है। पुलिस ने सूचना पर बिदा पुत्र दरस्सी तथा दरस्सी पुत्र भूरिया के साथ गांव निवासी छोटे पुत्र सिद्धा को हिरासत में लेकर फूलांच की थी और शाम को सभी को रिहा भी कर दिया था। छोटे का आरोप है कि गांव पहुंचने पर दरस्सी एवं बिदा उसे गांव निवासी मुन्नी के घर ले गए और गला दबाकर जमकर मारपीट करते हुए चोरी का जुर्म अपने सिर पर लेने का दबाव बनाया। सोमवार को छोटे ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र सौंपकर दावा किया है कि चोरी की घटना में बिदा और दरस्सी शामिल हैं। थाना पुलिस इनके खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रही है। पुलिस अधीक्षक ने मामले की जांच सीओ सदर राजेश कमल को सौंपी है।

आईसीएसई बोर्ड से निकेता पाल बनी जिला टापर

सुमेरपुर हमीरपुर। आईसीएसई बोर्ड परीक्षा में जिले के इकलौते विद्यालय अजय मेमोरियल की दसवीं की छात्रा निकेता पाल ने 93 प्रतिशत अंक प्राप्त करके विद्यालय एवं घर परिवार का नाम रोशन किया है। छात्रा इंटरमीडिएट के बाद नीट की परीक्षा उत्तीर्ण करके डॉक्टर बनने के सपना संजोये है। छात्रा के पिता सेना में कार्यरत है। मां गृहणी है। अजय मेमोरियल के प्रधानाचार्य अमित कुमार ने बताया कि हमारा विद्यालय आईसीएसई बोर्ड का जिले का इकलौता संस्थान है। इस वर्ष हाईस्कूल परीक्षा में विद्यालय के 44 छात्र छात्राएं शामिल हुए थे। विद्यालय का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा है। छात्रा निकेता पाल ने प्रथम, रवि कुमार 89.2 प्रतिशत अंक पाकर दूसरा तथा शुभ तिवारी ने 88 प्रतिशत अंक पाकर तीसरा स्थान हासिल किया है। छात्रा निकेता पाल ने बताया कि उसकी इच्छा डॉक्टर बनकर देश सेवा की है। वह इंटरमीडिएट के बाद नीट परीक्षा में शामिल होकर अपना सपना पूरा करना चाहती है। निकेता पाल के पिता राकेंद्र पाल सेना में कार्यरत हैं। मां सरला देवी गृहणी है।

छात्रा की सफलता पर विद्यालय के प्रबंधक भ्रमचंद्र गुप्ता, शिक्षक राकेश कुमार



गुप्ता, श्यामकरण यादव, विशंभर नाथ, बाबूराम, कौशलेन्द्र आदि ने हर्ष जताते हुए

सुमेरपुर हमीरपुर। अतिरिक्त दहेज के लिए विवाहिता के साथ मारपीट करके जान से मार देने की धमकी के आरोप लगाकर पीडिता ने पति, सास, जेट के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। सुरौली बुजुर्ग के चुनकी डेरा निवासी राजेंद्र सिंह की पुत्री सुषमा देवी का विवाह एटा जनपद के गठिया माखन थाना जैथारा में 17 जून 2017 को मोहित सिंह के साथ हुई थी। शादी के बाद से ही पति मोहित सिंह, जेट अतुल, सास मिथलेश सिंह अतिरिक्त दहेज के लिए प्रताड़ित करने लगे विगत दिनों उन्होंने बुरी तरह से जमकर पीटा और जान से मार देने की धमकी दी। थक-हार कर वह मायके लौट आई। पुलिस ने पीडिता की तहरीर पर ससुराली जनों के खिलाफ दहेज के लिए प्रताड़ित करने का मुकदमा दर्ज किया है।

शत-प्रतिशत मतदान हेतु किया गया जागरूक

हरदोई विकास खण्ड बावन के ग्राम पंचायत तत्योरा के प्राथमिक पाठशाला प्रा०पा० तत्योरा के बूथ संख्या 91, 92 का निरीक्षण किया गया, तथा मतदान जागरूकता पाठशाला का आयोजन किया गया, व मतदाता शपथ दिलायी गयी, तथा ग्राम में कलेण्डर का भी वितरण किया गया। चुनाव पाठशाला में उपस्थित मतदाताओं को



मतदान प्रतिशत बढ़ाये विभिन्न प्रकार की जानकारी दी गयी, तथा उपस्थित मतदाताओं द्वारा प्राप्त: सपरिवार वोट डाले जाने का आश्वासन दिया गया, ग्रामवासी/ मतदाताओं द्वारा अवगत कराया गया कि वह शत-प्रतिशत वोट हेतु जागरूक कर रहें है। कन्या जु०हा० तत्योरा के बूथ संख्या 92, 93, 94, का निरीक्षण किया गया तथा ग्रामों में घर-घर कलेण्डर का वितरण करते हुए सपरिवार मतदान करने हेतु अनुरोध किया गया। उक्त के अतिरिक्त रोस्टर के अनुसार सघई बहेटा के बूथ संख्या 327, 328, 329, फूल बहेटा के बूथ संख्या 347, 348, मूसैपुर के बूथ संख्या 59, प्रा०पा० भीखपुर, में मतदाता शपथ दिलायी गयी, तथा मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदाताओं को शत-प्रतिशत मतदान हेतु जागरूक किया गया। कार्यक्रम में डॉ० राम प्रकाश, खण्ड विकास अधिकारी बावन, श्री मिथिलेश कुमार, सहायक विकास अधिकारी सांख्यिकीय, के साथ ग्राम वासी उपस्थित थे।

एक दशक से ठेका उठने का इंतजार कर रहा कांजी हाउस

बिना ठेका के व्यक्ति विशेष का बना हुआ है कब्जा मौदहा हमीरपुर लगभग एक दशक से कांजी हाउस बिना किसी ठेका के एक व्यक्ति के कब्जे में बना हुआ है जिसमें पशु बंद होने के बजाए मछली का व्यापार किया जा रहा है हालांकि अधिशासी अधिकारी ने मुकदमा चलने की बात कही है। कस्बे के आवारा पशुओं को बंद करने के उद्देश्य से नगरपालिका द्वारा स्टेशन रोड में दशकों पहले कांजी हाउस का निर्माण कराया था जिसमें पशुओं को बंद करने के कारण नगरपालिका को राजस्व की प्राप्ति होती थी और नगरपालिका द्वारा प्रतिवर्ष कांजी हाउस का ठेका उठाया जाता था, लेकिन बीते एक दशक से भी अधिक समय से नगरपालिका द्वारा न तो कांजी हाउस का कोई ठेका उठाया गया है और न ही नगरपालिका को इससे किसी तरह का राजस्व मिल रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि कांजी हाउस में बीते लगभग एक दशक से एक व्यक्ति विशेष का ही कब्जा बना हुआ है जिसमें खुलेआम मछली बेचने का व्यापार किया जा रहा है। यहां सबसे बड़ी बात यह है कि सरकार की ओर से मांस मछली बेचने के लिए भी अलग से गार्डइलाइन जारी की गई है लेकिन कांजी हाउस में संचालित मछली व्यापार में उसकी भी धजियां उड़ाई जा रही है। इस सम्बन्ध में अधिशासी अधिकारी सुशील कुमार दोहरे ने बताया कि उक्त मामले में न्यायालय में मुकदमा चल रहा है।

चाकू की नोक पर नाबालिग से दुष्कर्म

मौदहा हमीरपुर एक दबंग युवक ने मां बाप को जान से मारने की धमकी देकर चाकू की नोक पर नाबालिग से दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। हालांकि पुलिस ने मामले की जांच की बात कही है। कस्बे निवासी एक पिता जो एक किसान के नलकूप में परिवार सहित रहता है ने कोतवाली में दिए शिकायती पत्र में बताया कि कस्बे में रहने वाले नरायच निवासी अनिल पुत्र टामी ने पहले उसकी नाबालिग लड़की को जबरदस्ती चाकू की नोक पर धमकी देकर मोबाइल फोन दिया और बात करने का दबाव बनाया फिर उसके बाद 23 अप्रैल को रात में नलकूप पर आकर जबरदस्ती चाकू की नोक पर मां बाप को मारने की धमकी देकर उसके साथ दुष्कर्म किया। पीडित पिता ने नाबालिग का मेडिकल परीक्षण करा मामला दर्ज करने की गुहार लगाई है वहीं कोतवाली प्रमारी राम आसरे सरोज ने बताया कि तहरीर आई है मामले की जांच की जा रही है जांच के बाद कार्यवाही की जाएगी

पार्सल में नशीली दवाओं का डर दिखा कर पचास हजार ठगे

मौदहा हमीरपुर पुलिस द्वारा साईबर ठगों के विरुद्ध आमजन को जागरूक करने के बाद भी साईबर ठगी की घटनाओं पर लगाम नहीं लगा रही है ऐसे ही एक व्यक्ति से उसके आधार कार्ड की डिटेल के आधार पर उसके द्वारा चीन कोरियर के माध्यम से नशीली दवाओं को भेजने का भय दिखाकर पचास हजार रुपये ठगने का मामला सामने आया है जबकि कोतवाली पुलिस ने ऐसे किसी मामले की जानकारी से इनकार किया है। कस्बे के मराठीपुरा चर्च कम्पाउंड निवासी उषेंद्र सिंह पुत्र राजकुमार ने कोतवाली में दिए शिकायती पत्र में बताया कि उसके पास एक काल आई थी जिसमें उसके आधार कार्ड की डिटेल के द्वारा बताया गया कि उसने एक कोरियर चाईना भेजा है जिसमें नशीली दवाएं हैं और उसके बाद स्काईप काल को अक्षरी मुंबई के प्रदीप सावंत को ट्रांसफर कर दी गई और कथित पुलिस अधिकारी प्रदीप सावंत ने उससे लम्बी बातचीत की और उसके एसबीआई मौदहा के खाते से पचास हजार रुपये ट्रांसफर करा लिए पीडित ने कार्यवाही की मांग की है वहीं इस सम्बन्ध में कोतवाली प्रमारी राम आसरे सरोज ने बताया कि उन्हें ऐसे किसी मामले की जानकारी नहीं है फिर भी अगर ऐसा मामला था तो पीडित को पहले ही कोतवाली आना चाहिए अब पैसा ट्रांसफर कर दिए हैं फिर भी अगर मामला सामने आता है तो जांच के बाद कार्यवाही की जाएगी।

तीन दिन के भीतर स्कूल बंद करने का आदेश

मौदहा हमीरपुर हर साल नये शिक्षा सत्र के साथ ही कुछ नये अमान्य स्कूल भी सामने आ जाते हैं ऐसे ही एक स्कूल को खण्ड शिक्षा अधिकारी ने जांच के बाद बंद करने का आदेश जारी किया है। कस्बे के मोहल्ला हैदरगंज भुईया रानी के



निकट लम्बे समय से एक रिहायशी मकान में नेशनल क्रिएटिव एकेडमी नाम से एक अमान्य विद्यालय संचालित हो रहा था जिसमें न तो बच्चों के बैठने की उचित व्यवस्था है और न ही शौचालय आदि की इतना ही नहीं एक एक कमरे में मानक से अधिक बच्चों को बिठाया जा रहा था जिसपर खण्ड शिक्षा अधिकारी रामगोपाल वर्मा ने जांच कर तीन दिन के भीतर विद्यालय बंद करने का अल्टीमेटम दिया है अन्यथा कानूनी कार्यवाही की बात कही है।



विश्व के पालनहार माने जाते हैं भगवान विष्णु

भगवान विष्णु को 39 नाम माने जाते हैं जो इस प्रकार हैं- विष्णु, नारायण, कृष्ण, वैकुण्ठ, विहरश्रवण, दामोदर, हृषीकेश, केशव, माधव, स्वभू, देव्यादि, पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, गरुडहृद्यज, पीताम्बर, अच्युत, शांति, विष्णुसेन, जनार्दन, उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पद्मनाभ, मधुरिपु, वासुदेव, त्रिविक्रम, देवकीनन्दन, शौरि, श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमाली, बलिध्वंसी, कसाराति, अधोक्षज, विश्वम्भर, कैटभजित, विधु और श्रवस्तलाञ्छन। भगवान विष्णु के शंख का नाम पाशजन्त्य तथा चक्र का नाम सुदर्शन, गदा का नाम कोमोदकी खड्ग का नाम नन्दक और मणि का नाम कोस्तुभ है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में वर्णन मिलता है कि लवणसमुद्र के मध्य में विष्णुलोक अपने ही प्रकाश से प्रकाशित है। उसमें भगवान श्रीविष्णु वर्षा ऋतु के चार मासों में लक्ष्मी द्वारा सेवित होकर शेष शर्या पर शयन करते हैं। वैकुण्ठ धाम के अन्तर्गत अयोध्या पुरी में एक दिव्य मण्डप है। मण्डप के मध्य भाग में रमणीय सिंहासन है। वेदमय धर्मादि देवता उस सिंहासन को नित्य घेरे रहते हैं। धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य, वैराग्य सभी वहां उपस्थित रहते हैं। मण्डप के मध्य भाग में अग्नि, सूर्य और चंद्रमा रहते हैं। कूर्म, नागराज तथा संपूर्ण वेद वहां पीठ रूप धारण करके उपस्थित रहते हैं। सिंहासन के

मध्य में अष्टदल कमल है, जिस पर देवताओं के स्वामी परम पुरुष भगवान श्रीविष्णु लक्ष्मी के साथ विराजमान रहते हैं। भक्त वत्सल भगवान श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए जप का प्रमुख मंत्र- ओम नमो नारायणाय तथा ओम नमो भगवते वासुदेवाय है। पुराणों में विष्णु, शिव और ब्रह्मा को एक माना गया है। ये त्रिदेव सृष्टी के जनक हैं, पालनहार हैं, और संहारकर्ता हैं। विभिन्न पुराणों में दिये गये कथानकों के माध्यम से त्रिमूर्ति की शक्ति के बारे में पता चलता है। मत्स्यावतार में प्रलय काल के उपरान्त जीव की उत्पत्ति और बचाव का कथानक, कूर्मावतार में डोलती पृथ्वी को विशाल कछुए की पीठ पर धारण करने का

भगवान विष्णु परमेश्वर के तीन मुख्य रूपों में से एक हैं। विष्णु को विश्व का पालनहार माना जाता है। वे अपने चार हाथों में क्रमशः शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करते हैं। भगवान विष्णु अत्यंत दयालु हैं। उनकी शरण में जाने पर कल्याण हो जाता है। जो भक्त भगवान विष्णु के नामों का कीर्तन, स्मरण, उनके अर्चाविग्रह का दर्शन, वंदन, गुणों का श्रवण और उनका पूजन करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। भगवान विष्णु के दस अवतार माने जाते हैं। यह हैं- मत्स्य अवतार, वराह अवतार, कूर्म अवतार, नृसिंह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, राम अवतार, कृष्ण अवतार, बुद्ध अवतार और कल्कि अवतार। इनमें कल्कि अवतार के बारे में कहा जाता है कि यह अवतार अभी होना है।

कथानक, नृसिंहावतार में भक्त प्रह्लाद के पिता देवराज हिरण्यकशिपु के वध का कथानक, वामनावतार में दैत्यराज बलि के गर्व हरण तथा तीनों लोकों को भगवान द्वारा तीन पगों में नापने का कथानक है, परशुरामावतार में क्षत्रियों के गर्व हरण का कथानक, रामावतार में राक्षस राज रावण के अहंकार को नष्ट कर उसके वध का कथानक, कृष्णावतार में कंस वध और महाभारत युद्ध में कौरवों के विनाश का कथानक और बुद्धावतार में जीव हत्या में लिप्त संसार के दुखीजन को अहिंसा का महान संदेश देने का कथानक रामाज को राही राह तो दिखाते ही हैं साथ ही ईश्वर की परम शक्ति का अहसास भी कराते हैं।

वास्तु

घर की सुरक्षा और अनेक बाधाओं को दूर करने के उपाय

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर का मुख्य दरवाजा कैसा हो जिससे घर में सुख, शांति एवं समृद्धि की वृद्धि होती रहे, इसका ज्ञान अवश्य होना चाहिए। थोड़ी-सी अज्ञानता के कारण वास्तुदोष उत्पन्न हो जाते हैं और घर में कलह, अशांति आदि की वृद्धि होने लगती है। ऐसा न हो, इसकी जानकारी यहां प्रस्तुत की जा रही है :-

1. पेड़ जहां भी लगे होते हैं, वहाँ पर छाया एवं ठंडक रहती है। पेड़ अगर फलदार होता है तो और भी अच्छा है, किन्तु वास्तुशास्त्र के अनुसार घर के मुख्यद्वार के सामने वृक्ष होना अशुभ माना जाता है। वृक्ष होने के कारण गृहस्वामी अधिकतर बीमार रह सकता है तथा उस पर एक न एक मुसीबतें आती ही रहती हैं। इसके अलावा कोर्ट केस पुलिस



2. फेंग-शुई के अनुसार गृहस्वामी एवं परिवार के सदस्यों पर मुख्य द्वार पर पेड़ होने के कारण अनेकानेक मुसीबतें आती ही रहती हैं। अगर पेड़ हो ही और काटना अशुभ माने हो तो मुख्य द्वार के ऊपर बाहर की ओर अष्ट कोणीय दर्पण (आईना) लगा देने से नकारात्मक ऊर्जा परावर्तित होकर वापस बाहर की ओर चली जाती है। इससे मुख्य द्वार का दोष समाप्त होकर घर में सुख-शांति की वृद्धि होने लगती है।
3. घर के दरवाजे के पास पानी होना बहुत ही मंगलकारी माना जाता है। उत्तर, पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर अगर घर का मुख्य द्वार है और वहां पानी हो तो अत्यंत शुभकारक होता है। दरवाजे के पास एक पानी का पात्र सावधानी से रख देना हितकारी है।
4. पानी से भरे हुए पात्र को दरवाजे के पास केवल बाईं ओर ही रखें ताकि जब आप घर में खड़े हों और बाहर की ओर देख रहे हों तो वह जल पात्र आपके बाईं ओर ही रहे। दरवाजे के दाईं ओर पानी नहीं रखना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि गृह स्वामी किसी अन्य महिला के प्रति आकर्षित हो सकता है।
5. दिनांक एवं वार आदि के साथ-साथ व्रत-त्यौहार आदि देखने के लिए कैलेंडर का उपयोग हर घर में किया जाता है। कैलेंडर को किसी भी दरवाजे के आगे या पीछे की ओर अथवा दरवाजे के मार्ग में कभी भी नहीं लटकाना चाहिए। फेंगशुई के अनुसार दरवाजे के ऊपर कैलेंडर लटकाने से घर के सदस्यों की आयु क्षीण होती है। मुख्य द्वार के ऊपर कैलेंडर लटकाना विशेष रूप से हानिकारक एवं दोषपूर्ण माना जाता है। प्रतीकात्मक रूप से इसका अर्थ यह होता है कि आपकी जिन्दगी के कितने दिन शेष बचे हैं? कैलेंडर को किसी अन्य जगह पर लगा कर इस दोष को सुभारा जा सकता है।
6. मकान में प्रतिवर्ष कुछ न कुछ मुरम्मत, रंग-रोगन, सफाई इत्यादि का कार्य करवाना ही होता है। अगर मकान का मुख्य द्वार अन्य निर्माण कार्य के कारण अवरुद्ध हो रहा हो तो यह फेंग-शुई के अनुसार खराब माना जाता है। इसके कारण गृह स्वामी को हृदयाघात तक हो सकता है। किसी भी कारण से मुख्य द्वार के सामने बांस-बल्ली न गाड़ कर थोड़ा हट कर ही गाड़ना चाहिए। अगर ऐसा करना अत्यंत ही आवश्यक हो तो द्वार के चौखट के पास सात सिक्कों को गाड़ देना चाहिए। इससे दोष मिट जाता है।
7. घर के मुख्य द्वार के सामने से सीढ़ी या लिफ्ट को नहीं लगाना चाहिए। लिफ्ट का दरवाजा बार-बार खुलता एवं



8. मुख्य द्वार के ठीक सामने गाय, बैल, भैंस, कुत्ता आदि किसी भी पालतू पशु को नहीं बांधना चाहिए। ऐसा होने पर घर के अंदर शुभ स्थितियों का प्रवेश बंद हो जाता है। मुख्य द्वार के सामने पशुओं के बंधे रहने से घर की स्त्रियों पर कुप्रभाव पड़ने लगता है। फेंग-शुई के अनुसार घर के मुख्य द्वार के सामने तोता या अन्य पिंजरा रखना भी हितकारी नहीं माना जाता है। पिंजरे को मुख्य द्वार से कुछ हटा कर रखना चाहिए।
 9. घर के प्रवेश द्वार के ऊपर ऐसे स्थान पर गणपति का चित्र लगाना चाहिए जिससे द्वार से निकलते समय गणपति सम्मुख सामने हों। द्वार के बाहर दोनों ओर स्वस्तिक का चिन्ह लाल रंग से बना देना शुभ होता है तथा बाधाएं घर के अंदर प्रवेश नहीं कर पातीं।
- इस प्रकार कुछ विधियों को अपना कर घर की सुरक्षा की जा सकती है और अनेक बाधाओं से दूर रह जा सकता है।

मनोकामनाएं पूर्ण करेंगे श्री गणेश के सिद्ध मंत्र

श्री गणेश शक्ति और शिवतत्व का साकार स्वरूप है। इन दोनों तत्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है। बुधवार को गणपति जी की विशेष पूजा अर्चना करने से आप के जीवन में आए हुए सभी प्रकार के दुख दर्द का नाश होता है, मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है, आयुष्य और बल में वृद्धि होती है और सर्वत्र आप की कीर्ति फैलती है। श्री गणेश अपने भक्तों के समस्त विघ्नों को दूर करने के लिए विघ्नों के मार्ग में विकट स्वरूप धारण करके खड़े हो जाते हैं।

किसी भी शुभ कार्य के आरम्भ में भगवान् श्री गणेश की पूजा-अर्चना करने का विधान है। कहते हैं कि महादेव पुत्र श्री गणेश के नाम का शुद्ध चित्त भाव से चिंतन करने तथा उनकी श्रद्धा

भाव से आराधना करते रहने से जीवन के कष्ट और दुर्भाग्य दूर होते हैं। भगवान गणेश का स्वरूप अत्यन्त ही मनोहर एवं मंगलदायक है। वे एकदन्त और चतुर्बाहू हैं। अपने चारों हाथों में वे क्रमशः पाश, अंकुश, मोदक पात्र तथा वर मुद्रा धारण करते हैं। वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा पीत वस्त्र धारी हैं। वे रक्त चंदन धारण करते हैं तथा उन्हें रक्त वर्ण के पुष्प विशेष प्रिय हैं। वे अपने उपासकों पर शीघ्र प्रसन्न होकर उनकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

श्री गणेश का मन्त्र जप करने से मन में सदविचार और सकारात्मक भाव आने लगते हैं। जिन मनुष्यों का आत्म विश्वास कमजोर होता है उनमें भी श्री गणेश की आराधना से विश्वास की

भावना मजबूत होने लगती है। श्री गणेश मंत्र जप के लिए श्री गणेश जी की प्रतिमा को पीत वस्त्र से ढंकी चौकी पर स्थापित करके सिद्ध, अक्षत, जनेऊ, बुंदी या बेसन का लड्डू, मिठाई आदि समर्पित करते हुए पूर्ण श्रद्धा भाव से श्री गणेश का पूजन करना चाहिए।

श्री गणेश जी से अपने द्वारा किए हुए गलत कार्यों को क्षमा करने की प्रार्थना करते हुए सुख, समृद्धि, सौभाग्य एवं शांति को कामना करनी चाहिए। शीघ्र फल प्राप्ति के लिए प्रत्येक बुधवार अथवा माह की चतुर्थी तिथि को उपावास रखते हुए पूर्ण विश्वास और शुद्ध आचरण के साथ श्री गणेश का पूजन एवं उपासना करनी चाहिए।

पूजन विधि- सुबह नित्य कर्मों से निवृत्त होकर भगवान श्री गणेश का

पंचोपचार पूजन करें। उन्हें दुर्वा व फूल चढ़ाएं। लड्डू का भोग लगाएं और इस मंत्र का जप पत्रे की माला से करें।

मंत्र- नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्मविद्यादायिने। यस्यागस्त्यायते नाम विघ्नसागरशोषणे।।।।

बिगड़े काम बनाने के लिए बुधवार को गणेश मंत्र का स्मरण करें-

ऋषी मया याः खिलवुः दिदाः त्रै बुद्धिप्रदीपाय सुराधिपाय। नित्याय सत्याय च नित्यबुद्धि नित्यं निरीहाय नमोस्तु नित्यम्।

अर्थात् भगवान गणेश आप सभी बुद्धियों को देने वाले, बुद्धि को जगाने वाले और देवताओं के भी ईश्वर हैं। आप ही सत्य और नित्य बोधस्वरूप हैं। आपको मैं सदा नमन करता हूँ।



पिता के अनन्य भक्त थे

भगवान परशुराम

भगवान विष्णु के पांचवें अवतार भगवान परशुराम का जन्म वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को प्रदोषकाल के समय हुआ था। पौराणिक ग्रंथों में बताया गया है कि पिता जमदग्नि और माता रेणुका ने तो अपने पांचवें पुत्र का नाम राम ही रखा था, लेकिन तपस्या के बल पर भगवान शिव को प्रसन्न करके उनके दिव्य अस्त्र परशु प्राप्त करने के कारण वे राम से परशुराम हो गए। भगवान परशुराम भगवान विष्णु के अवतार होने के साथ ही ब्रह्म जाति के कुल गुरु भी हैं इसलिए इनकी जयंती देशभर में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है।

भगवान परशुराम अपने पिता के अनन्य भक्त थे, पिता को आज्ञा से इन्होंने अपनी माता का सिर काट डाला था, लेकिन पुत्र-पिता के आशीर्वाद से इनकी माता की स्थिति यथावत हो गई। दरअसल कथाओं के अनुसार हुआ यह था कि एक बार माता रेणुका स्नान के लिए नदी किनारे गईं, संयोग से वहीं पर राजा चित्ररथ भी स्नान करने आया था, राजा चित्ररथ सुंदर और आकर्षक था। राजा को देखकर रेणुका भी आसक्त हो गईं, किंतु ऋषि जमदग्नि ने अपने योगबल से अपनी पत्नी के इस आचरण को जान लिया। उन्होंने आवेशित होकर अपने पांचों पुत्रों को अपनी मां का सिर काटने का आदेश दिया। किंतु परशुराम को छोड़कर सभी पुत्रों ने मां के खेह के बंधकर वध करने से इंकार कर दिया, लेकिन परशुराम ने पिता के आदेश पर अपनी मां का सिर काटकर अलग कर दिया।

ऋषि जमदग्नि ने आज्ञा का पालन न करने पर परशुराम को छोड़कर सभी पुत्रों को चेतनाशून्य हो जाने का शाप दे दिया, वहीं परशुराम को खुश होकर वर मांगने को कहा। तब परशुराम ने पूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ वर मांगा। जिसमें उन्होंने तीन वरदान मांगे- पहला, अपनी माता को फिर से जीवन देने और माता को मृत्यु की पूरी घटना याद न रहने का वर मांगा। दूसरा, अपने चारों चेतनाशून्य भाइयों की चेतना फिर से लौटाने का वरदान मांगा। तीसरा वरदान स्वयं के लिए मांगा जिसके अनुसार उनकी किसी भी शत्रु से या युद्ध में पराजय न हो और उनकी लंबी आयु प्राप्त हो।

श्रीजमदग्नि जी के आश्रम में एक कामधेनु गौ थी, जिसकी अलौकिक ऐश्वर्य शक्ति को देखकर कार्तवीर्यार्जुन उसे प्राप्त करने के लिए उपग्रह करने लगा था। अंत में उसने गौ को हासिल करने के लिए बल का प्रयोग किया और उसे माहिष्मती ले आया। किंतु जब परशुराम जी को यह बात विदित हुई तो उन्होंने कार्तवीर्यार्जुन तथा उसकी सारी सेना का विनाश कर डाला। जिस पर पिता ने परशुराम जी के इस चक्रवर्ती सम्राट के वध को ब्रह्म हत्या के समान बताते हुए उन्हें तीर्थ सेवन की आज्ञा दी। वे तीर्थ यात्रा पर चले गये, वापस आने पर माता-पिता ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

दूसरी ओर सहस्त्रार्जुन के वध से उसके पुत्रों के मन में प्रतिशोध की आग जल रही थी। एक दिन अवसर पाकर उन्होंने छद्म वेष में आश्रम आकर जमदग्नि का सिर काट डाला और उसे लेकर भाग निकले। जब परशुराम जी को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वे अत्यन्त क्रोधावेश में आग बबूला हो उठे और पृथ्वी को क्षत्रिय हीन कर देने की प्रतिज्ञा कर ली तथा 21 बार घूम-घूमकर पृथ्वी को निःक्षत्रिय कर दिया। फिर पिता के सिर को धड़ से जोड़कर कुरुक्षेत्र में अन्त्येष्टि संस्कार किया। पितृगणों ने इन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हीं की आज्ञा से इन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी प्रजापति कश्यपजी को दान में दे दी

और महेन्द्राचल पर तपस्या करने चले गये। सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष भंग करने जाने पर वह महेन्द्राचल से शीघ्रतापूर्वक जनकपुर पहुंचे, किंतु इनका तेज श्रीराम में प्रविष्ट हो गया और वे अपना वैष्णव धनु उन्हे देकर पुनरु तपस्या के लिए महेन्द्राचल वापस लौट गये। मान्यताओं के अनुसार, भगवान परशुराम के क्रोध का सामना गणेश जी को भी करना पड़ा था। दरअसल उन्हेने परशुराम जी को शिव दर्शन से रोक दिया था। क्रोधित परशुराम जी ने उन पर परशु से प्रहार किया तो उनका एक दांत नष्ट हो गया। इसी के बाद से गणेश जी एकदंत कहलाये।

भगवान परशुराम चिरजीवी हैं। वे अपने साधकों-उपासकों तथा अधिकारी महापुरुषों को दर्शन देते हैं। इनकी साधना-उपासना से भक्तों का कल्याण होता है। पौराणिक मान्यता है कि वे आज भी मन्दराचल पर्वत पर तपस्यारत हैं। ऋषि संतान परशुराम ने अपनी प्रभुता व श्रेष्ठवीरता की आर्य संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी। शैव दर्शन में उनका अद्भुत उल्लेख है जो सभी शैव सम्प्रदाय के साधकों में स्तुत्य व परम स्मरणीय है। देश में अनेक स्थानों पर भगवान जमदग्नि जी के तपस्या स्थल एवं आश्रम हैं, माता रेणुका जी के अनेक क्षेत्र हैं, प्रायः रेणुका माता के मंदिर में अथवा स्वतंत्र रूप से परशुराम जी के अनेक मंदिर भारत भर में हैं, जहां उनकी शांति, मनोरम तथा उग्र रूप मूर्तियों के दर्शन होते हैं।

परशुराम दरअसल राम के रूप में सत्य के संस्करण हैं, इसलिए नैतिक-युक्त का अवतारण हैं। भगवान परशुराम को उनके हठो स्वभाव, क्रोध और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए याद किया जाता है। उन्हेने अपने जीवन के लिए अपने ही नियम बना रखे थे। परशुराम जी के शुभ दिन उनके चरित्र का स्मरण और अनुसरण कर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकता है। भगवान शिव, परशुराम जी के गुरु हैं। वह तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी महापुरुष हैं।



नाटू-नाटू गाने के कोरियोग्राफर को नहीं मिली पहचान...

मुंबई। एसएस राजामौली के डायरेक्शन में बनी राम चरण और जूनियर एनटीआर स्टारर फिल्म आरआरआर को दुनियाभर में पसंद किया गया। फिल्म के गाने नाटू-नाटू ने ऑस्कर अवार्ड अपने नाम किया। नाटू-नाटू गाने के म्यूजिक कंपोजर एमएम कोरावानी को विश्व स्तर पर पहचान मिली। लेकिन इस गाने को कोरियोग्राफर करने वाले प्रेम रक्षित

को दुनिया भूल गई। ये मुद्दा डॉस कोरियोग्राफर रेमो डिस्जा और बोस्को मार्टिस ने उठाया है। दोनों कोरियोग्राफर्स के मुताबिक आरआरआर के गाने नाटू-नाटू गाने पर दुनिया ने डॉस किया। आज भी बड़े सेलेब्रिटी डॉस स्टेप सीख रहे हैं। लेकिन इस गाने को कोरियोग्राफर करने वाले प्रेम रक्षित को पहचान नहीं मिली।

लाइफ Style

जोया

अब दिखती है बेहद खूबसूरत

एजेसी नई दिल्ली

जोया ने मिस इंडिया इंटरनेशनल 2021 का खिताब जीता है। मूल रूप से लखनऊ की रहने वाली जोया ने अपनी कॉलेज की पढाई पूरी करने के बाद मॉडलिंग शुरू की और आज वह टॉप मॉडल्स में शामिल हैं।

फिल्म 'हम साथ साथ हैं' में एक्ट्रेस नीलम की बेटी का किरदार निभाने वाली बच्चों तो आपको याद ही होंगी। फिल्म में सलमान खान की भांजी के किरदार में नजर आई नही सी बच्ची ने अपनी ब्यूटनेस से फैस को काफी इंप्रेस किया था। फिल्म रिलीज होने के सालों बाद भी लोगों को उस बच्ची का मामूम का चेहरा याद है, लेकिन आज अगर आप उस बच्ची को देखेंगे तो बिल्कुल भी पहचान नहीं पाएंगे। 'हम साथ साथ हैं' की वो बच्ची अब पूरी तरह बदल गई है और आज वह मॉडलिंग की दुनिया में काफी मशहूर है। 30 साल की हो चुकी जोया अफरोज अब हद से अधिक खूबसूरत और ग्लैमरस नजर आती हैं। जोया की लेटेस्ट फोटो देखने के बाद लोग उनकी तुलना बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट से कर रहे हैं। जोया ने मिस इंडिया इंटरनेशनल 2021 का खिताब जीता है। मूल रूप से लखनऊ की रहने वाली जोया ने अपनी कॉलेज की पढाई पूरी करने के बाद मॉडलिंग शुरू की और आज वह टॉप मॉडल्स में शामिल हैं। जोया ने चाइल्ड आर्टिस्ट के तौर पर फिल्म कदो ना प्यार है, मन, कुछ ना कदो जैसी फिल्मों में काम किया है। इसके साथ ही टीवी पर भी कई सीरियल्स में जोया को देखा गया था।



हॉलीवुड मसाला

खतरनाक बीमारी ने जकड़ा

नई दिल्ली। ग्लोबल आइकन प्रियंका चोपड़ा के पति और सिंगर निक जोनस चर्चा में हैं। निक अपने म्यूजिक कॅरियर्स को लेकर लाइमलाइट में बने रहते हैं। लेकिन अब उन्होंने अपने कुछ कॅरियर्स को पोस्टपोन कर दिया है। अमेरिकन सिंगर ने इसके लिए फैस से गाफी मी मांगी। उन्होंने इसके पीछे का कारण अपना खतरनाक वायरस के संक्रमण को बताया। उन्होंने इन्स्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें फैस से कॅरियर्स पोस्टपोन करने के लिए माफी मांगते नजर आ रहे हैं।



बेयॉन्से का नाम होगा फ्रेंच डिक्शनरी में शामिल...

नई दिल्ली। बेयॉन्से संगीत की दुनिया के सबसे बड़े नामों में से एक नाम हैं। सिर्फ अमेरिका में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में करोड़ों लोग बेयॉन्से की आवाज के दीवाने हैं। इन दिनों गार्थिका का नाम काफी सुर्खियां बटोर रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो बेयॉन्से का नाम फ्रेंच डिक्शनरी में अमर होने जा रहा है। बेयॉन्से का नाम फ्रेंच डिक्शनरी में शामिल किया जाएगा। बेयॉन्से ने संगीत की दुनिया को एक से बढ़कर एक हिट गाने दिए हैं। उन्होंने अब तक के अपने करियर में 32 'वैमी अवॉर्ड्स' जीते हैं। जब भी उनका कोई गाना रिलीज होता है वह दुनिया भर में नंबर एक की लिस्ट पर कई सप्ताह तक राज करता है। बेयॉन्से के फैंस इन दिनों काफी उत्साहित नजर आ रहे हैं।

एक्टर्स के बराबर काम फीस मिलती है कम

नई दिल्ली। लारा दत्ता ने कहा कि सिनेमा में एक महिला के तौर पर बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, मगर इसमें सबसे बड़ी है फीस का भेदभाव। लारा ने ये भी कहा कि आज एक्टर्स पर एक खास तरीके से अच्छे दिखने का दबाव बहुत है। उन्होंने बताया कि इंडस्ट्री में फीस को लेकर चलने वाला ये भेदभाव एक पुरानी समस्या है। उन्होंने कहा कि जो बहुत लकी लीड एक्ट्रेस भी है उसे, अपने साथी मेल हीरो के मुकाबले बहुत कम फीस मिलती है। उन्होंने कहा 'हम इंडस्ट्री में अपने पुरुष साथियों से ज्यादा नहीं तो उनके बराबर तो मेहनत करते हैं ही, लेकिन अधिकतर महिलाओं को, अगर वो लकी हैं तो, मेल एक्टर की फीस का दसवां हिस्सा ही फीस में मिलता है।' 'ब्यूटी स्टैंडर्ड्स' जैसी बहुत सी चीजें बदली थी हैं, जिनसे एक्ट्रेसज का करियर लंबा हो गया है।



शरमिन को शादी के लिए किया था प्रपोज

मुंबई। संजय लीला भंसाली के डायरेक्शन में बनी वेबसीरीज हीरोमंडे इस समय चर्चा का विषय बनी हुई है। इस सीरीज में डायरेक्टर की भांजी शरमिन सहगल ने आलमजेब का अहम किरदार निभाया है। अब एक्ट्रेस ने अपने हाल के इंटरव्यू में सलमान खान से जुड़ी मजेदार बातें बताई हैं। इस इंटरव्यू में शरमिन ने फिल्म हम दिल चुक सनम के सेट का एक किस्सा शेयर किया है। एक्ट्रेस ने बताया उस समय सलमान खान ने उन्हें शादी के प्रपोज किया था। 1999 में आई सलमान खान, अजय देवगन और ऐश्वर्या राय स्टारर फिल्म हम दिल दे चुके सनम को ऑडियंस ने पसंद किया था। इस फिल्म को बनाने वाले डायरेक्टर संजय लीला भंसाली थे। ऐसे में चार साल की शरमिन अक्सर मामा से मिलने सेट पर पहुंच जाया करती थीं।

टीवी मसाला

नेटफ्लिक्स को कपिल शर्मा ने दिया 25 करोड़ का फटका

मुंबई। कपिल शर्मा का जादू ओटीटी पर कतई नहीं चल पाया है। नेटफ्लिक्स ने नए शो 'द ग्रेट इंडियन कपिल शर्मा' को पहले एपिसोड के प्रसारण के पांच हफ्तों में ही बंद करने का फैसला किया है। शो के आखिरी एपिसोड की शूटिंग हो चुकी है। जानकारी के मुताबिक इन पांच एपिसोड में ही नेटफ्लिक्स ने कपिल शर्मा पर करीब 25 करोड़ रुपये बहा दिए हैं। कपिल शर्मा इन दिनों कलर्स टीवी के एक अत्याधुनिक कार्यक्रम का मेजबान बनने की कोशिश में भी हैं, लेकिन उनकी घटती खांड वेल्यू को देखते हुए इस कार्यक्रम के लिए प्रायोजक मिलने की बड़ी चुनौती सामने आ रही है। स्टैंडअप कॉमेडियन से हो होस्ट और

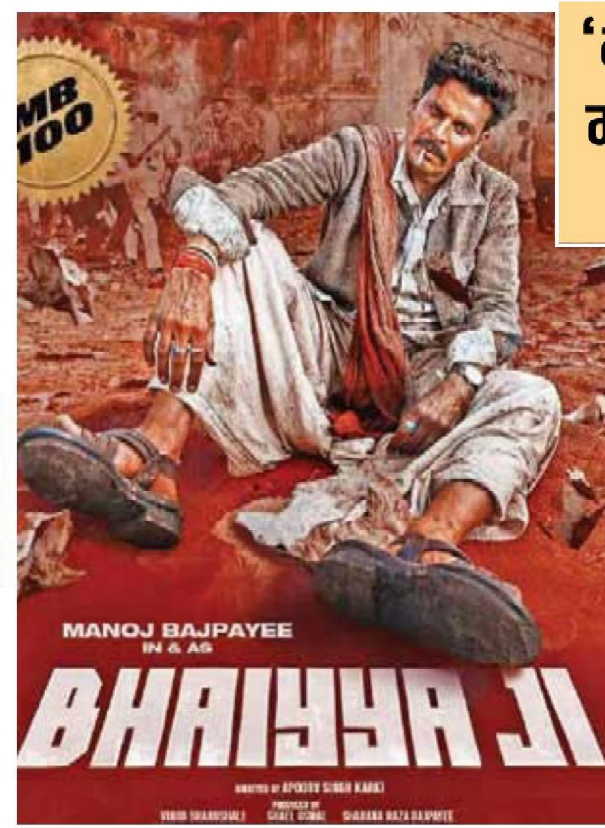


के हिसाब से गुनातान किया गया है।

40 साल में बनी 'मेगालोपॉलिस' संकट में



निर्देशक लगा चुके हैं। अब इसे दुनिया भर में विरित करने के लिए 500 करोड़ रुपये से ज्यादा की रकम की जरूरत है। और, पूरे मामले का दुखद पहलू ये है कि दुनिया की किरां भी बड़ी फिल्म स्टार को कंपनी ने, अभी तक इसे हथ नहीं लगाया है। कालजयी फिल्मों में शुमार 'गोंडफादर' सीरीज और उसके बाद 'पॉकेटलैस' नाऊ और एक्टर थे राजेश, जो बनाने वाले निर्देशक फ्रांसिस फोर्ड कोपोला को पहले पहल साल 1979 में एक ऐसी कहानी का विचार आया।



'भैया जी' 24 मई को होगी रिलीज...

नई दिल्ली। इंडस्ट्री के मशहूर अभिनेताओं में से एक मनोज बाजपेयी 'भैया जी' नाम की फिल्म से एक बार फिर दर्शकों को अपनी अकादमी का जलवा दिखाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। अभिनेता इन दिनों फिल्म की तैयारियों में जुटे हुए हैं। अपूर्व सिंह कावर्ती के निर्देशन में बनी इस फिल्म का टाल ही में टीजर रिलीज किया गया था, जिसमें अभिनेता एक्शन अवतार में दिखाई दे रहे थे। पोस्टर में मनोज बाजपेयी के चूल्हे पर साइड किया है। उन्होंने पोस्टर साइड करते हुए लिखा, 'आ रहा है रॉडिन हूड का बाप। मिलिए भैयाजी से, 24 मई से आपको नजदीकी सिनेमाघरों में।'

अनुपमा को स्मृति ईरानी से लेनी चाहिए प्रेरणा...

नई दिल्ली। टीवी शो 'अनुपमा' के जरिए घर-घर में मशहूर अदाकारा रूपाली गांगुली ने राजनीतिक पारी शुरू कर दी है। वह भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गई हैं। अभिनेत्री के इस कदम ने उनके फैस को काफी हैरान कर दिया है। हालांकि, सोशल मीडिया पर रूपाली को उनके फैस का खूब प्यार और शुभकामनाएं मिल रही हैं। अब शो के निर्माता राजन शाही ने भी अभिनेत्री को डेरो शुभकामनाएं दी हैं। राजन शाही ने रूपाली गांगुली को अभिनेत्री से नेता बनी स्मृति ईरानी द्वारा अपनाए गए रास्ते से प्रेरणा लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया। राजन शाही ने कहा, 'मुझे इस बात पर बेहद गर्व है कि रूपाली बाजपेयी में शामिल हुईं। वह बहुत मेहनती और समर्पित व्यक्ति हैं। वह एक अच्छी इंसान हैं और हम सक्रिय राजनीति में उनके जैसे लोगों की जरूरत है। वह सच में कड़ी मेहनत करेंगी और अनुपमा के रूप में उनका जो प्रभाव है, वह इसका इस्तेमाल सबके फायदे के लिए करेंगी।' उन्होंने आगे कहा, 'स्मृति ईरानी ने पहले ही हम सभी को गौरवान्वित कर दिया है। जब वह भाजपा में शामिल हुईं तो उन्हें इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। रूपाली अपने काम के प्रति बहुत पारदर्शक हैं इसलिए मुझे कोई समस्या नहीं दिखती।'

अंजलि को मिला सीता माता का रोल

मुंबई। लोकअप में नजर आई सोशल मीडिया स्टार अंजलि अरोड़ा को उनके करियर की पहली फिल्म मिल गई है। एक्ट्रेस अब स्क्रीन पर सीता के किरदार में नजर आएंगी। अंजलि को अधिकतर सिट के डायरेक्शन में बन रही फिल्म श्री रामायण कथा में सीता के रोल के लिए ऑफर किया गया था। एक्ट्रेस इस रोल को न मंजूर कर पाईं और अब स्क्रीन पर सीता के किरदार में नजर आने को तैयार हैं। अंजलि अरोड़ा अपने डॉस वीडियो कथा बादाम को लेकर मशहूर हुई हैं। अब उन्हें रामायण में देखा जाएगा। उन्होंने बताया कि वो सीता के रोल को पाकर खुश और खुद को धन्य महसूस करती हैं। सीता एक ऐसा किरदार है जिसे कोई मना नहीं कर सकता है। अंजलि ने आगे बताया कि उन्हें खुद नहीं पता थे रोल उनकी इंग्ली कैसे आ गया। इस बारे में जब उन्होंने डायरेक्टर अभिषेक से बात की तो पता चला कि सीता के लिए कुछ और एक्ट्रेसज को शॉर्टलिस्ट किया गया था।

शशि कपूर की गांववालों ने पकड़ ली थी कॉलर, बेटे को था पीटा

मुंबई। शेखर सुमन ने एक पॉडकास्ट में बताया कि कैसे एक बार वो, शशि कपूर और कुछ एक्टर्स बंगलुरु से वापस आ रहे थे। उस वक्त एक हादसा हो गया था और गांववालों ने शशि कपूर का कॉलर पकड़ लिया था। उन्होंने बताया कि एक बार वो फिल्म उत्सव की कार्ट के कुछ एक्टर्स के साथ बंगलुरु से वापस आ रहे थे। उस वक्त एक सड़क हादसा हो गया था, जिसके बाद गुस्साए गांववालों ने शशि कपूर का कॉलर पकड़ लिया था, उनके बेटे की गिटार्ड की थी और कार की विंडशील्ड तोड़ दी थी। उन्होंने बताया, 'शशि कपूर, अनुपमा पटेल, मैं और शशि कपूर के बेटे कुनाल कपूर बंगलुरु से प्लानेट पकड़ने के लिए वापस आ रहे थे। हम एम्बेसडर कार में थे। रास्ते में एक



अब नहीं रहे, लोगों ने उनको बालों से पकड़ लिया था और कहा था 'हम तुम्हारा सिर काटने जा रहे हैं।' इसके बाद एक्टर ने बताया कि जो आदमी गाड़ी से टकराया था वो एक पेड़ के नीचे बैठकर चाय पीते हुए मुस्कुरा रहा था। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं पता कि वो अपनी लोकल भाषा में क्या बड़बड़ा रहा था, लेकिन वो बहुत ही डरावना था।

जगह हमारी गाड़ी से एक आदमी टकरा गया। वो आदमी उड़ता हुआ गया, उसके बाद गांववाले आए और हम सबको मारने लगे। गुस्साए गांववालों ने गाड़ी का विंडशील्ड तोड़ दिया था, शशि कपूर की कॉलर पकड़ ली थी और उनके बेटे को मारने लगे थे।' शेखर सुमन ने बताया हमारे साथ एक और एक्टर थे राजेश, जो

'कृष 4' में सुपरहीरो बनकर वापसी करेंगे ऋतिक रोशन

नई दिल्ली। ऋतिक रोशन की फिल्म 'कृष 3' के बाद से ही फैस 'कृष 4' का इंतजार कर रहे हैं। फिल्म को लेकर लगातार अपडेट आते रहते हैं और फैस ऋतिक को कृष के रोल में देखने के लिए बताव हैं। फिल्म निर्माता सिद्धार्थ आनंद ने फिल्म को लेकर खुशखबरी दी है। ऋतिक रोशन 'कृष 4' में सुपरहीरो बनकर वापसी करेंगे। बता दें कि 'कोई मिल गया' सबसे पहले आया था, फिर कृष, कृष

3 सिनेमाघरों में आया था, सारी फिल्मों को दर्शकों ने काफी पसंद किया था। कुछ समय पहले सोशल मीडिया पर ऐसी खबरें आ रही थी कि कृष 4 को राकेश रोशन नहीं सिद्धार्थ आनंद डायरेक्ट करने वाले हैं। अब ये बात कन्फर्म हो गई है। सिद्धार्थ के साथ ऋतिक पहले भी काम कर चुके हैं, 'फाइटर' और 'वॉर' में वहीं, सिद्धार्थ की मूवी पठान ने बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही थी।



